मन की बात

सतत ऊर्जा: भारत के विकास की शक्ति

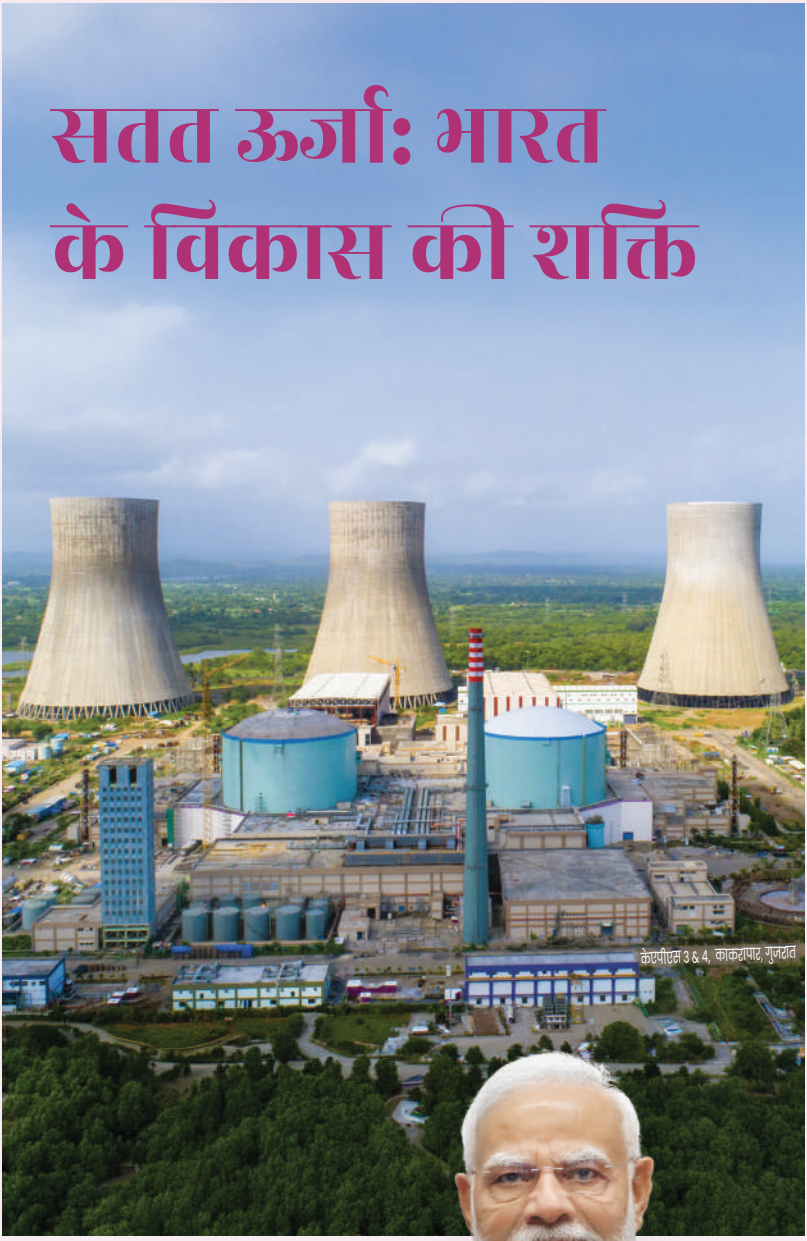

केएपीएस 3 & 4, काकरापार, गुजरात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

प्रधानमंत्री का सन्देश

सूची क्रम

मुख्य आलेख

30 **बुद्ध पूर्णिमा** : वैश्विक शांति और संतुलन के लिए बुद्ध के विचारों की सार्थकता

42 **टकराव से सह-अस्तित्व की ओर** भारत का प्रकृति संरक्षण मॉडल

46 **पूर्वोत्तर में बाँस का उदय** नवाचार, उद्यम और सशक्तीकरण की गाथाएँ

संक्षेप में

28 **भारत के पवन ऊर्जा संयंत्र** ऊर्जा आत्मनिर्भरता और हरित विकास का मार्ग

38 **बीटिंग रिट्रीट** : समारोह स्थल से डिजिटल प्लेटफॉर्म तक

54 **यूरोपियन गर्ल्स मैथेमैटिकल ओलम्पियाड** : बेटियों ने लहराया भारतीय परचम

64 **रवींद्रनाथ टैगोर** : संस्कृति और राष्ट्र निर्माण के द्रष्टा

लेख

20 **क्रिटिकैलिटी की प्राप्ति** : फास्ट ब्रीडर रिएक्टर और भारत में नागरिक उद्देश्यों के लिए परमाणु यात्रा
– डॉ. अजित कुमार मोहान्ती

24 **भारत में पवन ऊर्जा संवृद्धि**
सतत विकास का सशक्तीकरण
–डॉ. राजेश कत्याल

34 **बुद्ध पूर्णिमा का उत्सव** : आधुनिक युग में बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता –राजेश रंजन

50 **अभिलेखीय विरासत** : भोजपत्र से डिजिटल संरक्षण तक
– संजय रस्तोगी

56 **डिजिटल जनगणना 2027** : तेज़, स्मार्ट, समावेशी
–मृत्युंजय कुमार नारायण

60 **भारतीय 'चीज़' की कहानी**
परम्परा, स्वाद और वैश्विक सफलता –डॉ. मीनेश शाह

67 **प्रतिक्रियाएँ**

मेरे प्यारे देशवासियो
नमस्कार

'मन की बात' के एक और episode में आप सबसे जुड़कर खुशी हो रही है। इधर बीच चुनाव की भागदौड़ रही है, लेकिन आपके पत्रों और संदेशों के माध्यम से हमने देश और देशवासियों की उपलब्धियों पर एक-दूसरे से अपनी खुशियाँ साझा भी की हैं। इस बार 'मन की बात' की शुरुआत देश की एक ऐसी ही बहुत बड़ी उपलब्धि से करते हैं।

साथियो, भारत ने विज्ञान को हमेशा देश की प्रगति से जोड़कर देखा है। इसी सोच के साथ हमारे वैज्ञानिक Civil Nuclear Programme को आगे बढ़ा रहे हैं। उनके प्रयासों से यह कार्यक्रम राष्ट्र निर्माण में अहम् योगदान दे रहा है। इससे हमारी industrial growth को energy sector को healthcare sector को बहुत लाभ हुआ है। खेती किसानी से लेकर आधुनिक innovators को भी भारत के Civil Nuclear Programme ने बहुत मदद की है। साथियो, कुछ ही दिन पहले, हमारे Nuclear Scientist ने एक और बड़ी उपलब्धि से भारत का गौरव बढ़ाया है। तमिलनाडु के कलपक्कम में Fast Breeder Reactor ने Criticality हासिल कर ली है। दरअसल, Criticality वह stage है जिसमें reactor पहली बार self-sustaining nuclear chain

reaction में सफलता हासिल करता है। इस stage का मतलब है reactor का operation phase में पहुँचना। भारत की nuclear energy journey में यह एक ऐतिहासिक milestone है। और बड़ी बात ये भी कि परमाणु reactor पूरी तरह स्वदेशी तकनीक से निर्मित है।

साथियो, इसे Breeder Reactor क्यों कहते हैं? इसके पीछे भी एक वजह है। यह एक ऐसा system है जो ऊर्जा के उत्पादन के साथ-साथ भविष्य के लिए नया ईंधन भी खुद ही तैयार करता है। साथियो, मुझे मार्च 2024 का वह समय भी याद है, जब मैं कलपक्कम में reactor की core loading का साक्षी बना था। मैं उन सभी को बधाई देता हूँ जिन्होंने भारत के परमाणु कार्यक्रम में अपना अमूल्य योगदान दिया है। देशवासियों का जीवन बेहतर और आसान बनाने के लिए उनका यह प्रयास बहुत ही सराहनीय है। इससे विकसित भारत के हमारे संकल्प को भी एक नई ऊर्जा मिलेगी।

मेरे प्यारे देशवासियो 'मन की बात' में आज मैं एक ऐसी शक्ति की बात करना चाहता हूँ, जो अदृश्य है, लेकिन, जिसके बिना हमारा जीवन एक पल भी ना चले। यही ताकत भारत को आगे बढ़ा रही है। यह हमारी पवन-शक्ति है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है –

'वायुर्वा इति व्यष्टिः, वायुरवै समष्टिः।'

अर्थात् वायु सिर्फ एक तत्व नहीं है, यह जीवन की ऊर्जा है, यह समष्टि की शक्ति है।

साथियो, आज यही पवन-शक्ति भारत के विकास की नई कहानी लिख रही है। भारत ने हाल ही में पवन-ऊर्जा यानी Wind Energy में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। अब भारत का wind energy generation capacity 56 gigawatt से अधिक हो चुकी है। पिछले एक साल में ही करीब 6 gigawatt नई क्षमता जुड़ी है। Wind energy में भारत तेज़ी से आगे बढ़ रहा है और दुनिया भी हमारी तरफ

देख रही है। साथियो, आज भारत wind energy capacity में दुनिया में चौथे स्थान पर है। यह हमारे इंजीनियरों की मेहनत है... यह हमारे युवाओं का परिश्रम है... यह देशी की सामूहिक इच्छाशक्ति का प्रतीक है।

साथियो, गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, राजस्थान देश के अनेक राज्य इस sector में अपना परचम लहरा रहे हैं। गुजरात के कच्छ, पाटन, बनासकांठा जैसे क्षेत्र जहाँ पहले सिर्फ रेगिस्तान नजर आता था आज वहाँ बड़े renewable energy park बन रहे हैं। इसका लाभ युवाओं को मिल रहा है, नए अवसर बन रहे हैं, नई skills विकसित हो रही हैं, रोज़गार के नए रास्ते खुल रहे हैं।

साथियो, भारत के विकास के लिए सौर और पवन ऊर्जा ज़रूरी हैं। ये सिर्फ पर्यावरण की बात नहीं है – ये हमारे भविष्य की सुरक्षा है। इसमें हम सबकी भूमिका है। हमें बिजली बचानी है, हमें स्वच्छ ऊर्जा, clean energy अपनानी है। देश में हर स्तर पर ऐसे प्रयास ज़रूरी हैं क्योंकि इन्हीं से बड़ा बदलाव आता है।

साथियो, मई महीने की शुरुआत एक पावन अवसर के साथ होने जा रही है। कुछ ही दिनों में हम बुद्ध पूर्णिमा मनाएँगे। मैं आप सभी देशवासियों को अपनी अग्रिम शुभकामनाएँ देता हूँ। भगवान गौतम बुद्ध का जीवन संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है। उन्होंने हमें सिखाया है कि शांति हमारे भीतर से शुरू होती है। उन्होंने बताया है कि स्वयं पर विजय सबसे बड़ी विजय होती है। आज दुनिया जिस तरह के तनावों और संघर्षों से गुजर रही है। ऐसे समय में बुद्ध के विचार और भी अहम हो गए हैं।

साथियो, दक्षिण अमेरिका के चिली में एक संस्था भगवान बुद्ध के विचारों को आगे बढ़ा रही है। लद्दाख में जन्मे ड्रबपोन ओत्जर रिनपोचे (Drubpon Otzer Rinpoche) के मार्गदर्शन में काम हो रहा है। ये संस्था ध्यान और करुणा को लोगों के जीवन से जोड़ रही है। कोचीगुआज घाटी में बना स्तूप लोगों को शांति का अनुभव कराता है। वाकई यह देखकर गर्व

होता है। भारत की प्राचीन धारा दुनिया तक पहुँच रही है। दूर-दराज के लोग भी इससे जुड़ रहे हैं।

साथियो, बौद्ध परम्परा हमें प्रकृति से जुड़ना भी सिखाती है। भगवान बुद्ध को ज्ञान एक वृक्ष के नीचे मिला था। प्रकृति हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। देश में भी ऐसे प्रयास हो रहे हैं। कर्नाटक में Karma Monastery इसका अच्छा उदाहरण है। यह मठ एक जीवंत वन क्षेत्र है, जो 100 एकड़ में फैला है। इस वन में 700 से अधिक देसी वृक्षों को संरक्षित किया गया है। साथियो, बुद्ध का संदेश सिर्फ अतीत नहीं है। यह आज भी प्रासंगिक है और भविष्य के लिए भी ज़रूरी है। बुद्ध पूर्णिमा का यह अवसर प्रेरणा देता है। हम अपने जीवन में शांति बढ़ाएँ, करुणा अपनाएँ और संतुलन के साथ आगे बढ़ें।

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सभी जानते हैं हमारे देश में अब 23 जनवरी यानी नेताजी सुभाष की जयंती से लेकर 30 जनवरी यानी गाँधी जी की पुण्यतिथि तक गणतंत्र का महोत्सव मनाया जाता है। इसी महोत्सव का अहम हिस्सा होता है – Beating Retreat. **आज मैं आपसे Beating Retreat की चर्चा कर रहा हूँ, क्योंकि इसके पीछे एक खास वजह है।**

साथियो, आपने देखा होगा, यह समारोह अलग-अलग bands की विविध संगीत परम्पराओं को दर्शाता है। बीते कुछ सालों से इसमें भारतीय संगीत का समावेश बढ़ा है और ये देश के लोगों को भी बहुत पसंद आ रहा है। इस साल की Beating Retreat ceremony भी बहुत यादगार रही थी। Air Force, Army, Navy और C.A.P.F के bands ने बहुत ही अच्छी performance दी थी।

साथियो, शानदार Music के साथ-साथ जानदार formations का ये कार्यक्रम, सबका ध्यान खींचता है। Air Force band ने सिंदूर formation बनाया। NAVAL Band ने मत्स्य यंत्र formation बनाया। वहीं, Army Band के performance में वंदे-मातरम् के

150 साल और cricket में भारत की सफलता को भी दर्शाया गया।

साथियो, Beating Retreat के बीत जाने के बाद ये सारी मेहनत ये उपलब्धि धीरे-धीरे ओझल हो जाती थी, लेकिन अब इसे लेकर बहुत ही अच्छा प्रयास हुआ है। Beating Retreat का music पहली बार WAVES OTT पर भी उपलब्ध है। आने वाले समय में यह दूसरे platforms पर भी मौजूद होगा - आप इसे ज़रूर सुनें। आपको अपनी Armed Forces और उनकी परम्पराओं पर बहुत गर्व होगा।

साथियो, पिछले कुछ वर्षों में देश के अलग-अलग हिस्सों से प्रकृति के संरक्षण की प्रेरक कहानियाँ सामने आई हैं। ये कहानियाँ हमें उम्मीद देती हैं और गर्व से भर देती हैं। मैं 'मन की बात' के श्रोताओं से कुछ उदाहरण साझा करना चाहता हूँ। इनको सुनकर आपका मन प्रसन्न हो जाएगा। पहले, बात कच्छ के रण की। बरसात खत्म होते ही यहाँ की धरती जीवंत हो जाती है। हर साल लाखों Flamingo यहाँ आते हैं। पूरा इलाका गुलाबी रंग से रंग जाता है, इसलिए इसे 'Flamingo City' कहा जाता है। ये पक्षी यहीं घोसलें बनाते हैं और अपने बच्चों को बड़ा करते हैं। कच्छ के लोग इन्हें 'लाखा जी के बाराती' कहते हैं। अब लाखा जी के ये बाराती कच्छ में पर्यावरण संरक्षण के बड़े सुंदर प्रतीक बन गए हैं।

साथियो, दूसरा किस्सा इंसान और वन्य-जीवों के सहयोग का है और ये उत्तर प्रदेश से है। यहाँ के तराई इलाकों में फसल के समय हाथियों के झुंड गाँव की ओर आते हैं। इससे टकराव की आशंका बढ़ती है। लेकिन, अब यू.पी. में भी 'गज मित्र' जैसे प्रयास शुरू हुए हैं। गाँव के लोग ही टीम बनाकर हाथियों पर नजर रखते हैं। वे समय रहते लोगों को सतर्क करते हैं। इससे टकराव कम हो रहा है और लोगों में भरोसा बढ़ रहा है।

साथियो, मध्य भारत से भी एक अच्छी खबर आई है। छत्तीसगढ़ में blackbuck,

यानी, काले हिरण फिर से दिखाई देने लगे हैं। एक समय इनकी संख्या बहुत कम हो गई थी, लेकिन लगातार प्रयास हुए और संरक्षण बढ़ाया गया। आज ये फिर से खुले मैदानों में दौड़ते नजर आते हैं। यह हमारी खोती विरासत की वापसी है। ऐसी ही उम्मीद Great Indian bustard यानी गोडावण के संरक्षण में भी दिख रही है। ये पक्षी हमारे रेगिस्तानी इलाकों की पहचान हुआ करती थी। लेकिन, एक समय इसकी संख्या बहुत कम रह गई थी। हालत ये थी कि ये पक्षी लुप्त होने की कगार पर पहुँच गई थी। लेकिन अब इसके संरक्षण के लिए बड़ा अभियान चल रहा है। वैज्ञानिक तरीके अपनाए जा रहे हैं। प्रजनन केंद्र बनाए गए हैं और अब नए जीवन की शुरुआत दिखाई दे रही है।

साथियो, प्रकृति और मानव अलग नहीं हैं। हम एक-दूसरे के साथी हैं। जब हम प्रकृति को समझते हैं, उसका सम्मान करते हैं और उसके साथ मिलकर चलते हैं, तो बदलाव साफ दिखाई देता है। आज यही बदलाव देश के कोने-कोने से नई उम्मीद बनकर सामने आ रहा है।

मेरे प्यारे देशवासियो Northeast हम सब के लिए अष्टलक्ष्मी है। यहाँ भरपूर talent है और Northeast की प्राकृतिक सुंदरता भी सबका ध्यान खींचती है। **'मन की बात' में भी हम अक्सर Northeast के लोगों की उपलब्धियों पर चर्चा करते आए हैं। आज ऐसी ही एक और उपलब्धि की मैं आपसे चर्चा करूँगा और वो है - Bamboo sector में Northeast की सफलता।** साथियो, जिस चीज को कभी बोझ के रूप में देखा जाता था, वह आज रोज़गार, कारोबार और innovation को नई गति दे रही है। हमारी माताएँ-बहनें इसकी सबसे बड़ी लाभार्थी हैं। आपको ये जानकर हैरानी होगी कि bamboo की परिभाषा बदल देने से कितना बड़ा परिवर्तन आया है। साथियो, अंग्रेजों के बनाए कानून के हिसाब से bamboo को पेड़ के रूप में परिभाषित किया गया

था और इससे जुड़े नियम बहुत कड़े थे। कहीं पर भी bamboo को ले जाना बहुत मुश्किल था। ऐसे में यहाँ के लोग बाँस से जुड़े काम-धंधे से दूर होते गए। साथियो, साल 2017 में कानून में बदलाव करके हमने bamboo को पेड़ की category से बाहर किया। जिसके नतीजे सबके सामने हैं। आज पूरे Northeast में bamboo sector फल-फूल रहा है। लोग लगातार innovation करके इसमें value addition कर रहे हैं।

साथियो, त्रिपुरा के गोमती district के बिजॉय सूत्रधार और south त्रिपुरा के प्रदीप चक्रवर्ती उन्हीं की बात करें। इन्होंने नए कानूनों को अपने लिए एक बड़े अवसर के रूप में देखा। फिर इन्होंने अपने काम को technology से जोड़ा। आज वे पहले से कहीं बेहतर और कहीं ज़्यादा बाँस के उत्पाद बना रहे हैं।

नागालैंड के दीमापुर और आसपास के इलाकों में कई ऐसे Self Help Groups हैं जिन्होंने bamboo से जुड़े food products में value addition किया है। वहाँ खोरोलो क्रिएटिव क्राफ्ट जैसी टीमें भी हैं, जो, बाँस के furniture और handicrafts पर काम कर रही हैं ।

साथियो, मिज़ोरम के मामित जिले में ऐसी टीमें हैं, जो बाँस के tissue culture और poly-house management पर काम कर रही हैं। मुझे सिक्किम में गंगटोक के करीब Lagastal Bamboo Enterprise Team के बारे में भी पता चला है। यह bamboo से handicrafts, अगरबत्ती sticks, furniture और interior decor items बनाती है।

साथियो, मैंने यहाँ पर कुछ ही उदाहरण दिए हैं। देश में bamboo sector की सफलता की यह list काफी लम्बी है। मैं आप सभी से आग्रह करूँगा

कि Northeast का कोई-न-कोई बाँस का उत्पाद ज़रूर खरीदें। आप इसे gift के रूप में भी दे सकते हैं। आपके इस प्रयास से उन लोगों का हौसला बढ़ेगा, जो bamboo products को बनाने में अपना पसीना बहाते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, तेज़ी से बदलते हुए इस समय में technology हमारी ज़िंदगी का बहुत बड़ा हिस्सा बन गई है। आज हम अपने अतीत को वर्तमान से जोड़ने में भी technology का कमाल देख रहे हैं। इस दिशा में हाल ही में एक ऐसा development हुआ है जिससे शिक्षा से जुड़े लोग और इतिहास में रुचि रखने वाले बहुत खुश हुए हैं। **साथियो, कुछ दिन पहले ही National Archives of India ने एक विशेष portal पर एक अनोखा database शेयर किया है। इस संस्था ने 20 करोड़ से भी .ज्यादा अमूल्य दस्तावेजों को digitize कर सार्वजनिक किया है।** इनमें से कुछ तो बहुत ही दिलचस्प हैं- 7वीं शताब्दी की गिलगित पांडुलिपियाँ भोजपत्र पर लिखी हुई हैं। यहाँ आपको 8वीं शताब्दी का एक रोचक ग्रंथ श्री भुवालय भी देखने को मिलेगा। अंकों पर आधारित यह ग्रंथ एक grid के रूप में है। रानी लक्ष्मीबाई से जुड़े कुछ अहम पत्र भी आप यहाँ देख सकते हैं। इनसे 1857 में उनके द्वारा लिए गए कुछ निर्णयों का पता चलता है; जो उनके पराक्रम को दर्शाते हैं। जो लोग नेताजी सुभाष के बड़े प्रशंसक हैं उनके लिए यहाँ नेताजी के जीवन, आज़ाद हिन्द फौज और उनकी speech से जुड़े कई documents हैं। आपको पंडित मदन मोहन मालवीय जी उनसे जुड़े कई documents भी मिलेंगे। इनमें BHU की स्थापना और

हिन्दी साहित्य सम्मेलन से जुड़ी अहम जानकारियाँ हैं। यहाँ हमारे संविधान सभा से जुड़े कई अनोखे दस्तावेज भी उपलब्ध हैं। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप www.abhilekh-patal.in को ज़रूर visit करें। यह आपको अपने इतिहास का अद्भुत अनुभव देगा।

साथियो, जरा कल्पना कीजिए, आप दुनिया-भर के सबसे प्रतिभाशाली लोगों के बीच हैं, आपके पास गणित के बहुत ही कठिन सवाल हैं। इन्हें सुलझाने के लिए समय है – केवल साढ़े चार घंटे। यानी वक्त बहुत कम है और competition international है, बहुत तगड़ा है। ऐसी स्थिति में nervous होना बहुत स्वाभाविक है। लेकिन इन्हीं परिस्थितियों में हमारी बेटियों ने कमाल कर दिया। **इस महीने की शुरुआत में फ्रांस के बोरदो (Bordeaux) में European Girls Mathematical Olympiad का आयोजन हुआ था। Maths में गहरी रुचि रखने वाली स्कूली छात्राओं के लिए ये एक बड़ी प्रतियोगिता थी। यह दुनिया की सबसे सम्मानित प्रतियोगिताओं में से एक है। इस Olympiad में हमारी बेटियों ने अब तक का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन किया।** मुझे इस प्रतिभाशाली टीम पर बहुत गर्व है। इसमें मुंबई की श्रेया मुंधड़ा, तिरुवनंतपुरम की संजना चाको, चेन्नई की शिवानी भरत कुमार और कोलकाता की श्रिमोयी बेरा शामिल थीं। इसमें हमारी टीम विश्व में छठे स्थान पर रही। श्रेया ने Gold Medal जीतकर इतिहास रच दिया, संजना ने Silver, तो

शिवानी ने Bronze Medal अपने नाम किया।

साथियो, इस Olympiad के लिए भारत में जो selection की प्रक्रिया है, वो अपने आप में बहुत कठिन है। इसका एक multi-stage selection process है। इसमें Regional, State और National Level पर कठिन चुनौतियों को पार करना होता है। इसके बाद सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वाली छात्राएँ एक महीने के Mathematics Training Camp में शामिल होती हैं। यह camp, Tata Institute of Fundamental Research के Homi Bhabha Center for Science Education में आयोजित होता है। इस camp के आखिर में team selection test होता है। इसमें performance के आधार पर ही भारत की टीम चुनी जाती है।

साथियो, हर वर्ष देश-भर की करीब 6 लाख students इस Mathematical Olympiad Program में हिस्सा लेती हैं। समय के साथ यह संख्या लगातार बढ़ रही है, यानी, देश की बेटियों के बीच Olympiad का यह culture तेज़ी से लोकप्रिय हो रहा है। इन होनहार बेटियों को support करने के लिए मैं उनके parents की भी सराहना करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे देश में इस समय एक बहुत अहम अभियान चल रहा है, जिसके बारे में हर भारतीय को जानकारी होनी ज़रूरी है। ये है जनगणना का अभियान, यह दुनिया की सबसे बड़ी जनगणना है। साथियो, जो साथी पहले से इस तरह की प्रक्रिया से गुजरे हैं, इस बार जनगणना का उनका अनुभव अलग होने वाला है। **जनगणना 2027 को digital बनाया गया है।** सारी जानकारी सीधे digital माध्यम में दर्ज हो रही है। घर-घर जाने वाले कर्मचारियों के पास mobile app है। वे आपसे बात करके उसी में जानकारी दर्ज करेंगे। साथियो, इस बार जनगणना में आपकी भागीदारी भी आसान बनाई गई है, आप खुद भी अपनी जानकारी दर्ज कर सकते हैं। कर्मचारी के आने से 15

दिन पहले आपके लिए सुविधा शुरू होगी। आप अपने समय के अनुसार जानकारी भर सकते हैं। जब आप प्रक्रिया पूरी करते हैं, तो आपको एक विशेष ID मिलती है। ये ID आपके mobile या e-mail पर आती है। बाद में जब कर्मचारी आपके घर आता है, तो आप यही ID दिखाकर जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं। इससे दोबारा जानकारी देने की ज़रूरत नहीं पड़ती। समय भी बचता है और प्रक्रिया आसान हो जाती है। साथियो, जिन राज्यों में स्व-गणना का काम पूरा हो गया है वहाँ गणना कर्मचारी द्वारा घरों के सूचीकरण का कार्य भी शुरू कर दिया गया है। अब तक लगभग 1 करोड़ 20 लाख परिवारों का मकान सूचीकरण का कार्य पूरा भी हो चुका है। साथियो, देश की जनगणना सिर्फ सरकारी काम नहीं है। यह हम सब की जिम्मेदारी है। आपकी भागीदारी बहुत ज़रूरी है। आपकी दी गई जानकारी पूरी तरह सुरक्षित रहती है, यह गोपनीय रखी जाती है, digital सुरक्षा के साथ इसे सुरक्षित किया जाता है। आइए, हम सब मिलकर इस प्रक्रिया में भाग लें। जनगणना 2027 को सफल बनाएँ।

साथियो, हमारे देश में खाने-पीने की परम्परा सिर्फ स्वाद तक सीमित नहीं रही है। इसी परम्परा का एक दिलचस्प हिस्सा है भारत की Cheese. कुछ दिन पहले मैंने tweet के माध्यम से एक जानकारी साझा की थी। ब्राजील में आयोजित एक अन्तरराष्ट्रीय Cheese प्रतियोगिता में भारतीय Cheese के दो brands को प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले हैं। इस उपलब्धि की चर्चा social media पर भी खूब हुई। कई लोगों ने मुझसे कहा कि भारत में Cheese की जो विविधता है उस पर भी बात होनी चाहिए।

साथियो, भारत के dairy sector में बहुत बड़ा बदलाव आ रहा है। इस

sector में Value addition ने हमारे पारम्परिक स्वाद को एक नई पहचान दी है। आज भारतीय cheese दुनिया-भर में अपनी जगह बना रही है। breakfast हो, lunch हो, या dinner, दुनिया की प्लेटों में भारत का स्वाद पहुँच रहा है। जम्मू-कश्मीर की कलारी cheese को ही लीजिए - इसे 'कश्मीर का मोजेरेला' कहा जाता है। गुज्जर-बकरवाल समुदाय के लोग, पीढ़ियों से इसे बनाते और खाते आए हैं। वहीं सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख में 'छुरपी' बहुत प्रसिद्ध है। पहाड़ों की सादगी और कोमलता इसके स्वाद में भी महसूस होती है। इस cheese की खास बात यह है कि इसे याक के दूध से बनाया जाता है।

साथियो, महाराष्ट्र और गुजरात में 'टोपली नु पनीर' जिसे 'सुरती cheese' भी कहा जाता है। वह भी अपनी एक अलग पहचान रखता है। मैंने यहाँ सिर्फ कुछ नाम लिए हैं लेकिन हमारे देश में स्वाद की यह दुनिया बहुत व्यापक है। आज इस परम्परा को नई ताकत मिल रही है। अनेक भारतीय कम्पनियाँ इस क्षेत्र में निवेश कर रही हैं। आधुनिक तकनीक आ रही है, बेहतर packaging हो रही है और हमारे उत्पाद world standard के साथ आगे बढ़ रहे हैं। इसी का परिणाम है कि भारतीय cheese अब देश की सीमाओं से निकलकर दुनिया के बाज़ारों और रेस्तरां तक पहुँच रही है। आज हम local से global की बात करते हैं, उसमें भारतीय cheese का उदाहरण हमें आगे की दिशा दिखाता है। मुझे विश्वास है भारत का स्वाद, भारत की परम्परा और भारत की गुणवत्ता दुनिया के लोगों को एक नया अनुभव देगी और भारत से एक नया जुड़ाव भी बनाएगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, इस महीने देश के कई हिस्सों में नववर्ष सहित

अनेक पर्व-त्योहार मनाए गए। कुछ ही दिन बाद 9 मई को 'पोच्चीशे बोइशाख' के अवसर पर हम गुरुदेव टैगोर की जन्म-जयंती मनाएँगे। गुरुदेव बहु-आयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वे एक महान लेखक और विचारक तो थे ही, उन्होंने कई प्रसिद्ध संस्थानों को भी आकार दिया। गुरुदेव टैगोर लोगों के लिए ऐसे उद्योगों के पक्षधर थे, जिनमें स्थायी रोज़गार मिलने के साथ ही गाँवों का भी कल्याण हो। उनके रवींद्र संगीत का प्रभाव आज भी दुनिया-भर में बना हुआ है। मेरे लिए शांति निकेतन की यात्राएँ अविस्मरणीय रहीं। यह वही institution है, जिसे उन्होंने पूरे समर्पण भाव से सींचा और संवारा था। उन्हें एक बार फिर मेरी विनम्र श्रद्धांजलि।

साथियो, मई का महीना 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की याद भी दिलाता है। मैं माँ भारती की सभी वीर संतानों को नमन करता हूँ, जिन्होंने लोगों में देश-भक्ति की भावना जागृत की थी। यह समय स्कूली बच्चों की छुट्टियों का भी होता है। मेरा आग्रह है कि वे अपनी छुट्टियों का भरपूर आनंद लें और कुछ नया सीखने का प्रयास करें। गर्मियों के इस मौसम में आप सभी अपने स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखें। अगले महीने आपसे फिर मुलाकात होगी। कुछ नए विषयों के साथ, देशवासियों की कुछ नई उपलब्धियों के साथ। बहुत-बहुत धन्यवाद ।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

डॉ. अजित कुमार मोहान्ती
सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग एवं
अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग

क्रिटिकैलिटी की प्राप्ति

फास्ट ब्रीडर रिएक्टर और भारत में नागरिक उद्देश्यों के लिए परमाणु यात्रा

भारत में नागरिक उद्देश्यों के लिए परमाणु ऊर्जा के प्रयोग की समूची यात्रा एक दीर्घावधि विज़न पर आधारित है जिसमें वैज्ञानिक नवाचार और सतत राष्ट्रीय विकास की संयुक्त धारणाएँ निहित हैं। यह स्वप्न सबसे पहले भारत में परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के जनक डॉ. होमी जहाँगीर भाभा ने संजोया था तथा निरंतर प्रयासों से ऐसा सुदृढ़ ढाँचा विकसित कर लिया गया है जिससे ऊर्जा सुरक्षा, ऊर्जा उत्पादन की स्थायी व्यवस्था और टेक्नोलॉजी की दृष्टि से पूर्ण आत्मनिर्भरता सुनिश्चित हो गई है। तमिलनाडु में कलपक्कम के 500 मेगावॉट इलेक्ट्रिकल क्षमता वाले भाविनि (BHAVINI) प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर में अभी हाल में क्रिटिकैलिटी प्राप्त हुई। इस यात्रा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण पड़ाव पार करने में अहम सफलता प्राप्त हो गई है।

इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि का सूत्रपात मार्च, 2024 में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की कलपक्कम यात्रा के समय हो गया था। प्रधानमंत्री ने प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडिंग परमाणु रिएक्टर में कोर लोडिंग आरम्भ होने का अवलोकन किया। यह रिएक्टर में उत्पादन शुरू होने से पहले की सबसे महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया होती है। अप्रैल, 2026 में पहली बार यहाँ क्रिटिकैलिटी प्राप्त हुई। यह देश के नागरिक उद्देश्यों के लिए परमाणु कार्यक्रम की सार्थकता का परिचायक है।

फास्ट ब्रीडर रिएक्टर असल में परम्परागत (पुराने) परमाणु रिएक्टरों के मुकाबले कहीं ज़्यादा उन्नत होता है। जहाँ पुराने परम्परागत रिएक्टरों में ऊर्जा उत्पादन के लिए ईंधन की जरूरत पड़ती है वहीं फास्ट ब्रीडर रिएक्टर का डिज़ाइन इस प्रकार विकसित होता है कि इसमें बिजली उत्पादन के लिए जितने ईंधन की खपत होती है, उससे ज़्यादा ईंधन का उत्पादन होता रहता है। फास्ट न्यूट्रोन्स के इस्तेमाल और पूरी सावधानी से इंजीनियर किए गए कनफिगरेशन (व्यवस्था प्रारूप) के सहारे एफबीआर

बिजली उत्पादन करने के साथ ही उर्वरक सामग्री को अतिरिक्त नाभिकीय विखंडन के ज़रिए ईंधन में परिवर्तित कर देता है। इस अनूठी खूबी के कारण ही यह तकनीक भारत के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हो रही है क्योंकि स्थायी विकास के लिए उपलब्ध परमाणु संसाधनों का अधिकतम उपयोग कर पाना नितांत आवश्यक है।

परमाणु रिएक्टर के मामले में 'क्रिटिकैलिटी' अर्थात उत्पादन शुरू करने की स्थिति सबसे अहम उपलब्धि मानी जाती है। इस स्थिति को प्राप्त करने का सीधा सा अर्थ होता है कि रिएक्टर ने पहली बार नियंत्रित और स्वचालित चेन-रिएक्शन (शृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया) स्थापित करने में सफलता पा ली है। तकनीकी रूप से देखा जाए तो यह रिएक्टर के 'निर्माण' के चरण से आगे जाकर 'उत्पादन' चरण में प्रवेश करने को दर्शाता है। भारत के लिए यह असल में दशकों के शोध-अनुसंधान डिज़ाइन और इंजीनियरिंग प्रयासों के बाद जटिल और अग्रणी परमाणु तकनीकों में विशेषज्ञता एवं महारत हासिल करने की महती सफलता का प्रतीक है।

यह क्षण केवल तकनीक की उन्नति के हिसाब से ही नहीं बल्कि भारत की दीर्घावधि परमाणु नीति में योगदान के अनुसार भी ऐतिहासिक है। PFBR में उत्पादकता हासिल करने के साथ ही भारत तीन चरणों के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के दूसरे चरण में पहुँच गया है। पहले चरण में दाबित भारी पानी वाले रिएक्टरों में प्राकृतिक (कच्चा) यूरेनियम तथा हल्के पानी वाले रिएक्टरों में मामूली-सा संशोधित यूरेनियम प्रयोग किया जाता है और इसमें थोड़ी-सी मात्रा में प्लूटोनियम का उत्पादन भी हो जाता है। अब PFBR से शुरू हुए दूसरे चरण में यह प्लूटोनियम ही यूरेनियम के साथ मिलने पर अतिरिक्त फिसाइल सामग्री तैयार करता है और विखंडन की क्रिया स्वतः सक्रिय हो जाती है। तीसरे चरण में पहुँचने पर भारत के विशाल थोरियम भंडारों का इस्तेमाल किया जाने लगेगा जिससे लम्बे समय के लिए स्थायी ऊर्जा सुरक्षा प्राप्त हो सकेगी।

इस तकनीक में मुख्य भूमिका 'ब्रीडिंग प्रक्रिया' की है। फास्ट ब्रीडर रिएक्टर फास्ट न्यूट्रॉन स्पेक्ट्रम में काम करते हैं जहाँ रिएक्टर में उपलब्ध होने वाले अतिरिक्त न्यूट्रॉन यूरेनियम-238

तमिलनाडु के कलपक्कम में प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (पीएफबीआर)

और थोरियम-232 जैसे उर्वरक पदार्थों को प्लूटोनियम-239 तथा यूरेनियम-233 जैसे विखंडनशील पदार्थों में परिवर्तित कर देते हैं और रिएक्टर संचालित होने पर नया ईंधन भी बनना शुरू हो जाता है। इस ईंधन चक्र से परमाणु सामग्री का बार-बार इस्तेमाल करना सम्भव हो जाता है जिससे ईंधन की दक्षता कई गुना बढ़ जाती है। भारत में यूरेनियम के सीमित संसाधन हैं और थोरियम के विशाल भंडार हैं जिससे ऊर्जा का स्थायी, दीर्घावधि और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित है।

ऐसी उन्नत प्रणालियों के डिज़ाइन और संचालन में सुरक्षा पर सबसे ज़्यादा ध्यान दिया जाता है। एफबीआर की शानदार न्यूट्रॉनिक और थर्मल (तापीय) विशेषताओं के कारण कूलेंट के रूप में तरल सोडियम का इस्तेमाल किया जाता है। PFBR में सुरक्षा की दृष्टि से गर्मी से निपटने की डिके हीट प्रणाली जैसी विशेष खूबियाँ होती हैं जिनमें बची हुई गर्मी को समाप्त करने के लिए अलग से पॉवर सप्लाई की ज़रूरत नहीं पड़ती। इसकी न्यूट्रॉनिक विशेषताएँ ऐसी होती हैं कि फीड बैक कोएफिशिएंट अर्थात् गुणक नकारात्मक (शून्य से कम) रहता है जिससे ओवरहीट होने की हालत में भी रिएक्टर पॉवर कम हो जाती है। रिएक्टर में कूलेंट लीकेज की सम्भावना कम से कम रखने के हिसाब से भी सुरक्षा की उन्नत व्यवस्थाएँ की जाती हैं। बारीकी से विकसित सशक्त पदार्थ और सावधानीपूर्वक तैयार किए गए संचालन प्रोटोकॉल अपनाने से हर स्थिति में सुरक्षित और भरोसेमंद क्रियान्वयन सुनिश्चित रहता है और इसी में भारत की परमाणु इंजीनियरिंग और नियामक प्रारूपों की परिपक्वता का पता चलता है।

उत्पादन शुरू हो जाने ('क्रिटिकैलिटी' प्राप्त कर लेने) के साथ ही अगले चरण की शुरूआत हो गई है। अब यह सुनिश्चित करने के लिए इंजीनियरिंग और भौतिकी से जुड़े परीक्षण किए जाएँगे कि परीक्षणों के दौरान मापे गए मानक (पैरामीटर) रिएक्टर डिज़ाइन के लिए निर्धारित किए गए मानकों जितने या उनसे बेहतर ही हों। इसी के आधार पर नियामक संस्था से चरणवार स्वीकृति प्राप्त की जाएगी तथा रिएक्टर पॉवर बढ़ाई जाएगी ताकि बिजली उत्पादन होने लगे। निर्धारित स्तर का निष्पादन और स्थिरता सुनिश्चित करने हेतु ये सभी उपाय आवश्यक हैं क्योंकि तभी लगातार बिजली उत्पादन होगा।

इन तकनीकी सफलताओं के साथ ही 'क्रिटिकैलिटी' प्राप्त करने के अहम वैश्विक प्रभाव भी हैं। फास्ट ब्रीडर रिएक्टर को सफलतापूर्वक विकसित करके, उसे कमीशन (चालू) करने के साथ ही भारत उन विशेष देशों के समूह में शामिल हो गया है जिनके पास ऐसी क्षमता है। भारत अब ऐसा देश बन गया है जो मुख्य रूप से स्वदेशी विशेषज्ञता

के बल पर ही जटिल परमाणु प्रणालियों का विकास, निर्माण और संचालन पूरी सफलता के साथ कर सकता है।

PFBR में आत्मनिर्भर भारत की भावना भी स्पष्ट झलकती है। इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केंद्र ने इसका डिज़ाइन तैयार किया तथा भारतीय नाभिकीय विद्युत निगम लिमिटेड ने इसका निर्माण किया है और भारतीय उद्योगों ने इसमें भरपूर सहयोग किया। इस प्रकार यह परस्पर सहयोग करके मज़बूती से आगे बढ़ने वाले राष्ट्रीय इकोसिस्टम की ताकत को दर्शाता है। यह राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में देश के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और संस्थानों की एकजुटता का प्रतीक भी है।

देश में ऊर्जा की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए परमाणु ऊर्जा से भरोसेमंद, स्वच्छ और कार्बन की कम मात्रा वाले बिजली के स्रोत उपलब्ध होने लगेंगे। ब्रीडर रिएक्टर कार्यक्रम इन स्रोतों के दक्षतापूर्वक इस्तेमाल करने और क्लोज्ड ईंधन चक्र को मज़बूती देकर भारत की दूरगामी ऊर्जा नीति को मज़बूती प्रदान करेगा तथा ऊर्जा के मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर होने के देश के संकल्प को पूरा करने में भी पूरी सहायता देगा।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि PFBR की पहली क्रिटिकैलिटी केवल वैज्ञानिक उपलब्धि ही नहीं है– यह प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की क्षमताओं और देश के भावी विज़न को साकार करने के प्रति हमारे दृढ़ विश्वास का प्रतीक भी है। यह वास्तव में सपनों को मूर्त रूप देने और सम्भावना को साकार करने की नई शक्ति को दर्शाता है।

भारत के आगे बढ़ने के साथ ही यह उपलब्धि परमाणु विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में तेज़ी से सफलताएँ पाने के नए मार्ग खोलेगी तथा नवाचारों के माध्यम से देश की सामरिक क्षमताएँ भी बढ़ेंगी। यह पहली 'क्रिटिकैलिटी' केवल परमाणु प्रतिक्रिया की शुरूआत ही नहीं है बल्कि भारत की विकास यात्रा में नए युग के उदय का प्रतीक है जो विकसित भारत के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में भी बड़ा कदम है।

डॉ. राजेश कत्याल
महानिदेशक
राष्ट्रीय पवन ऊर्जा संस्थान

भारत में पवन ऊर्जा संवृद्धि

सतत विकास का सशक्तीकरण

भारत का पवन ऊर्जा क्षेत्र देश के स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों के एक आधार स्तम्भ के रूप में उभरा है, जिसने देश को स्थायी ऊर्जा के क्षेत्र में एक वैश्विक नेता के रूप में स्थापित किया है। मार्च 2026 तक कुल स्थापित क्षमता 56 गीगावॉट को पार कर जाने के साथ तथा वित्त वर्ष 2025-26 में लगभग 6 गीगावॉट की रिकॉर्ड वृद्धि हासिल करने के पश्चात, भारत अब चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका और जर्मनी के बाद विश्व स्तर पर चौथे स्थान पर पहुँच गया है। यह उपलब्धि इस क्षेत्र के सुदृढ़ विकास और राष्ट्रीय विकास तथा अंतरराष्ट्रीय जलवायु लक्ष्यों, दोनों को आगे बढ़ाने में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करती है।

तकनीकी विकास और नवाचार

भारत में पवन ऊर्जा क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण तकनीकी बदलाव आए हैं। शुरुआती दौर के संयंत्रों की जगह अब आधुनिक मेगावॉट-श्रेणी के टर्बाइनों ने ले ली है, जिनमें उन्नत ड्राइवट्रेन डिज़ाइन हैं, अर्थात यांत्रिक प्रणाली की रूपरेखा और इंजीनियरिंग, जिन्हें विशेष रूप से भारत की कम पवन गति वाली स्थितियों के लिए अनुकूलित किया गया है। इसने कम व्यवहार्य क्षेत्रों में भी काफी सम्भावनाओं के द्वार खोल दिए हैं। टर्बाइन की ऊँचाई बढ़ी है, रोटर (मशीन का घूमने वाला भाग) का व्यास अब अक्सर 100 मीटर से अधिक होता है, और ब्लेड बनाने की सामग्री पारम्परिक ग्लास फाइबर कम्पोजिट (काँच के रेशों से बनी मिश्रित सामग्री) से विकसित होकर अब हल्की और अधिक मज़बूत कार्बन फाइबर विकल्पों में बदल रही है। रीसाइकिल योग्य ब्लेड डिज़ाइन दीर्घकालिक स्थिरता को और भी अधिक बढ़ाते हैं।

रोटर के व्यास और हब (केंद्रबिंदु) की ऊँचाई लगभग 30 मीटर से बढ़कर 180 मीटर और निर्धारित क्षमता 55 किलोवॉट से बढ़कर 15 मेगावॉट हो जाने से पवन टरबाइन प्रौद्योगिकी में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

दक्षता और डिजिटल निगरानी में नवाचार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग अभिन्न अंग बन गए हैं, जो त्वरित अनुकरण के माध्यम से वायुगतिकीय रूप से अनुकूलित ब्लेड डिज़ाइन, समस्याओं के उत्पन्न होने से पहले ही उनका पूर्वानुमान लगाने के लिए

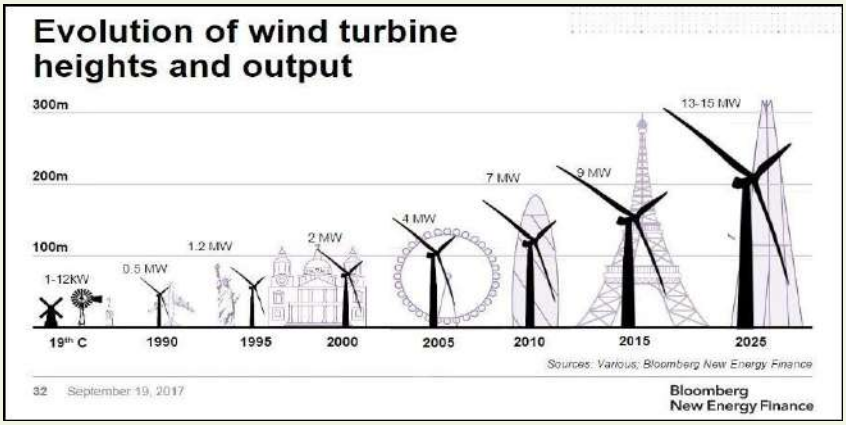

पवन टरबाइन हब के आकार का विकास

पूर्वानुमानित रखरखाव और एससीएडीए (SCADA) (पर्यवेक्षी नियंक्षण और डेटा अधिग्रहण) डेटा के माध्यम से रियल टाइम में खराबी का पता लगाने में सक्षम बनाते हैं। डिजिटल ट्विन्स, यानी टरबाइनों और सम्पूर्ण पवन फार्मों की आभासी प्रतिकृतियाँ, संचालकों को स्थितियों का अनुकरण करने, पिच और यॉ सेटिंग्स (गति या दिशा को नियंत्रित करने वाली सेटिंग्स) को अनुकूलित करने और बेहतर प्रदर्शन और लागत दक्षता के लिए परिदृश्यों का परीक्षण करने में सक्षम बनाते हैं। स्वचालित नियंत्रण प्रणाली चक्रवात जैसी मौसम सम्बंधी चरम घटनाओं के दौरान भी सुरक्षित संचालन में सहायता करती है।

इन अग्रिम विकास कार्यों के पूरक के तौर पर, बैटरी ऊर्जा भंडारण के साथ जोड़ी गई पवन-सौर हाइब्रिड प्रणाली है, जो चौबीसों घंटे नवीकरणीय ऊर्जा

विंड टरबाइन डिजिटल ट्विन्स

विभिन्न प्रकार की नियंत्रण प्रणालियाँ

(प्राकृतिक स्त्रोतों से प्राप्त ऊर्जा) प्रदान करती है और बिजली की अनियमितता की समस्या को प्रभावी ढंग से हल करती है। अपतटीय पवन ऊर्जा (Offshore wind) अगला बड़ा क्षेत्र है। इसे गुजरात और तमिलनाडु में शुरुआती परियोजनाओं के लिए 'वायबिलिटी गैप फंडिंग' योजना जैसी पहलों का सहयोग मिलता है। ये विकास पवन ऊर्जा सम्पत्तियों को अधिक तकनीक-सक्षम, अधिक कुशल और लगातार प्रतिस्पर्धी बना रहे हैं।

प्रेरक और घरेलू विनिर्माण

हाल ही में क्षमता में हुई वृद्धि को एक सहायक नीतिगत ढाँचे और मज़बूत औद्योगिक क्षमताओं से गति मिली है। अंतर-राज्यीय ट्रांसमिशन प्रणाली (Inter-State Transmission System) शुल्क में छूट, पवन नवीकरणीय उपभोग दायित्व, प्रतिस्पर्धी टैरिफ (मूल्य)-आधारित बोली प्रक्रिया और

राष्ट्रीय पवन-सौर हाइब्रिड नीति जैसे उपायों ने एक स्थिर और निवेशक-अनुकूल वातावरण तैयार किया है।

भारत के नवीकरणीय ऊर्जा पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने में घरेलू विनिर्माण की अहम भूमिका है। इस क्षेत्र की वार्षिक उत्पादन क्षमता 24 गीगावॉट से अधिक है, जिसमें स्वदेशीकरण का स्तर 70–80 प्रतिशत तक है। यह मजबूत आधार न केवल घरेलू माँग को पूरा करता है, बल्कि यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और अन्य बाज़ारों में निर्यात को भी बढ़ावा देता है। आयात पर निर्भरता कम करके और आपूर्ति शृंखला की मज़बूती बढ़ाकर, स्थानीय विनिर्माण लागत-प्रतिस्पर्धा को बढ़ाता है, रोज़गार के अवसर पैदा करता है, और भारत को एक प्रमुख वैश्विक खिलाड़ी के रूप में स्थापित करता है। विशेष रूप से ऐसे समय में जब विभिन्न देश आपूर्ति के कुछ ही स्रोतों पर अत्यधिक निर्भरता को कम करके अपने विकल्पों का विस्तार कर रहे हैं।

वैश्विक योगदान और उपलब्धि का महत्त्व

पवन ऊर्जा के क्षेत्र में भारत की प्रगति वैश्विक स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण में एक सार्थक योगदान देती है। वर्ष 2025 में, देश ने लगभग 6.3 गीगावॉट की क्षमता हासिल की, जिससे यह दुनिया भर में नए संयंत्र प्रतिष्ठापनों के मामले में तीसरा सबसे बड़ा बाज़ार बन गया। भारत सहित शीर्ष पाँच बाज़ारों का उस वर्ष वैश्विक नई पवन ऊर्जा क्षमता में 86 प्रतिशत का योगदान रहा।

पेरिस समझौते के लक्ष्य से पाँच साल पहले ही 50 प्रतिशत से अधिक गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित स्थापित क्षमता हासिल करना और ऐसे उदाहरण जिनमें नवीकरणीय ऊर्जा ने दैनिक बिजली की माँग का 50 प्रतिशत से अधिक हिस्सा पूरा किया, भारत की आर्थिक विकास को गति देने के साथ-साथ कार्बन उत्सर्जन में कमी (decarbonization) लाने की क्षमता को उजागर करते हैं। अन्य विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए यह एक प्रेरणादायक मॉडल के रूप में कार्य करता है, जो दर्शाता है कि जलवायु परिवर्तन के प्रति महत्त्वाकांक्षी कदम और विकास, दोनों साथ-साथ चल सकते हैं।

अग्रणी राज्य और क्षेत्रीय लाभ

पवन ऊर्जा के क्षेत्र में सबसे आगे रहना भौगोलिक रूप से वितरित है। गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और राजस्थान जैसे राज्य इस मामले में सबसे आगे हैं, और इनमें से प्रत्येक राज्य अपनी विशिष्ट प्राकृतिक और नीतिगत अनुकूलताओं का लाभ उठा रहा है। गुजरात को अपनी 1,600 किमी. लम्बी तटरेखा और लगातार चलने वाली हवाओं से फायदा मिलता है, जिसे मंजूरी देने की कुशल प्रक्रियाओं

मुप्पंडल, तमिलनाडु में विंड फार्म

और खावड़ा रिन्यूएबल एनर्जी पार्क जैसी बड़े पैमाने की परियोजनाओं से और भी मजबूती मिली है। तमिलनाडु राज्य इस क्षेत्र में अग्रणी होने के नाते, पश्चिमी घाटों से गुजरने वाली तेज़ मानसूनी हवाओं का उपयोग करता है, जिसका एक बेहतरीन उदाहरण मशहूर मुप्पंडल विंड फार्म है। महाराष्ट्र का दक्कन का पठार भरोसेमंद अंदरूनी पवन गलियारे उपलब्ध कराता है, जबकि राजस्थान के विशाल शुष्क भूभागों में अपार क्षमता (150 मीटर हब की ऊँचाई पर 284 गीगावॉट होने का अनुमान) और हाइब्रिड (दो या अधिक अलग-अलग तकनीकों का एक साथ इस्तेमाल) परियोजनाओं के लिए बेहतरीन सम्पूरकता मौजूद है।

ऊर्जा सुरक्षा की सुदृढ़ता

पवन ऊर्जा भारत की ऊर्जा सुरक्षा को काफी हद तक सुदृढ़ करती है। वैश्विक ईंधन की कीमतों में उतार-चढ़ाव से स्वतंत्र होकर घरेलू बिजली पैदा करके, यह अंतरराष्ट्रीय आघातों के असर को कम करती है। शाम के व्यस्त समय और मॉनसून के महीनों में, जब सौर ऊर्जा का उत्पादन कम हो जाता है, तब पवन ऊर्जा का उत्पादन काफी योगदान देता है। यह सौर ऊर्जा का पूरक है, जिससे एक ज़्यादा स्थिर और भरोसेमंद ग्रिड को समर्थन मिलता है। यह विविधीकरण देश की जीवाश्म ईंधनों पर आयात निर्भरता को देखते हुए विशेष रूप से मूल्यवान है।

कुछ अन्य अवसर

हालाँकि इसकी दिशा काफी सकारात्मक है, फिर भी ट्रांसमिशन इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने, जमीन और राइट-ऑफ़-वे प्रक्रियाओं को आसान बनाने, बिजली खरीद समझौतों और ऊर्जा भंडारण को तेज़ी से लागू करने जैसे क्षेत्रों पर लगातार ध्यान देने से इसकी पूरी क्षमता का और अधिक उपयोग हो पाएगा। ये प्रयास, चल रहे नीतिगत और तकनीकी विकास के साथ मिलकर, भारत के व्यापक लक्ष्यों को पाने में मदद करेंगे, जिनमें 2030 तक 100 गीगावॉट पवन ऊर्जा क्षमता और कुल मिलाकर 500 गीगावॉट गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता हासिल करना शामिल है।

भारत में पवन ऊर्जा का त्वरित गति से बढ़ना केवल क्षमता-सम्बंधी उपलब्धि नहीं है, उससे कहीं अधिक है। यह सतत विकास, तकनीकी नेतृत्व और वैश्विक जलवायु जिम्मेदारी के प्रति एक रणनीतिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है। जैसे-जैसे यह क्षेत्र और ज़्यादा परिपक्व होता जाएगा, यह न केवल भारत के लिए एक स्वच्छ ऊर्जा भविष्य को सुदृढ़ करेगा, बल्कि एक लचीली, कम-कार्बन वाली अर्थव्यवस्था की दिशा में दुनिया भर में किए जा रहे प्रयासों में भी सार्थक योगदान देगा।

भारत के पवन ऊर्जा संयंत्र

ऊर्जा आत्मनिर्भरता और हरित विकास का मार्ग

भारत की ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन के ख़िलाफ़ वैश्विक लड़ाई में पवन ऊर्जा एक अनिवार्य स्तम्भ बन गई है। आज भारत 56 गीगावॉट से अधिक पवन ऊर्जा क्षमता के साथ विश्व में चौथे स्थान पर पहुँच गया है। यह वृद्धि केवल आँकड़ों तक सीमित नहीं है। यह भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार के नए अवसर पैदा करने, कार्बन उत्सर्जन को कम करने और बिजली ग्रिड को अधिक लचीला बनाने की कहानी है।

महत्त्वपूर्ण तथ्य !

- **वैश्विक रैंकिंग :** भारत वर्तमान में पवन ऊर्जा की कुल स्थापित क्षमता के मामले में दुनिया का चौथा सबसे बड़ा देश है।
- **रिकॉर्ड वृद्धि :** वित्त वर्ष 2025-26 में भारत ने 6.05 गीगावॉट की अब तक की सबसे बड़ी वार्षिक वृद्धि दर्ज की है।
- **अग्रणी राज्य :** गुजरात 15.19 गीगावॉट के साथ देश में पहले और तमिलनाडु 12.10 गीगावॉट के साथ दूसरे स्थान पर है।
- **मुप्पंडल विंड फार्म :** तमिलनाडु में स्थित यह संयंत्र 1500 मेगावॉट क्षमता के साथ भारत का सबसे बड़ा ऑनशोर पवन ऊर्जा केंद्र है।
- **जैसलमर विंड पार्क :** राजस्थान का यह पार्क 1,064 मेगावॉट से अधिक क्षमता वाला देश का दूसरा सबसे बड़ा पवन ऊर्जा क्लस्टर है।
- **कवड़ा हाइब्रिड पार्क :** गुजरात के कच्छ में बन रहा यह दुनिया का सबसे बड़ा रिन्यूएबल एनर्जी पार्क होगा, जिसकी कुल क्षमता 30 गीगावॉट नियोजित है।
- **स्वदेशी उत्पादन :** भारत की वार्षिक उत्पादन क्षमता 24 GW से अधिक है और इस क्षेत्र में 70–80% स्वदेशीकरण स्तर प्राप्त कर लिया गया है।

- **डिजिटल तकनीक :** अब पवन फार्मों की ख़राबियों का पता लगाने और रखरखाव के लिए 'डिजिटल ट्विन' (Digital Twins) और एआई/मशीन लर्निंग का उपयोग किया जा रहा है।
- **ऑफशोर विंड :** गुजरात और तमिलनाडु में 'वायबिलिटी गैप फंडिंग' के माध्यम से समुद्री तटों पर पवन ऊर्जा की नई सम्भावनाएँ तलाश की जा रही हैं।
- **भविष्य का लक्ष्य :** सरकार ने वर्ष 2030 तक 100 गीगावॉट पवन ऊर्जा क्षमता हासिल करने का महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है।

पवन ऊर्जा केवल पर्यावरण संरक्षण का माध्यम नहीं, बल्कि भारत की ऊर्जा सुरक्षा और आत्मनिर्भर भविष्य का आधार है। 'मेक इन इंडिया' के तहत विकसित होती यह तकनीक आने वाली पीढ़ियों के लिए एक हरित, सुरक्षित और समृद्ध राष्ट्र सुनिश्चित करेगी।

बुद्ध पूर्णिमा

वैश्विक शांति और संतुलन के लिए बुद्ध के विचारों की सार्थकता

वैशाख मास की वह पूर्णिमा, जब चाँद अपनी पूरी चमक के साथ आकाश में होता है, केवल एक खगोलीय घटना नहीं है। यह उस महामानव के स्मरण का दिन है जिसने ढाई हज़ार साल पहले दुनिया को 'अप्प दीपो भव' (अपना दीपक स्वयं बनो) का मंत्र दिया था। आज जब दुनिया युद्धों, जलवायु परिवर्तन और मानसिक तनाव के दोराहे पर खड़ी है, तब गौतम बुद्ध की करुणा और शांति की बातें केवल धार्मिक उपदेश नहीं, बल्कि 'सर्वाइवल किट' की तरह महसूस होती हैं।

माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में कहा कि बुद्ध का संदेश सिर्फ़ अतीत नहीं, बल्कि भविष्य के लिए भी अनिवार्य है। उन्होंने दक्षिण अमेरिका के चिली से लेकर भारत के कर्नाटक तक फैले उन उदाहरणों का ज़िक्र किया, जो दिखाते हैं कि बुद्ध के विचार कैसे सीमाओं को लांघकर मानवता को नई राह दिखा रहे हैं। आइए, इन दो शख्सियतों के ज़रिए बुद्ध की प्रासंगिकता को समझते हैं, जिनका उल्लेख प्रधानमंत्री ने वैश्विक शांति और पारिस्थितिक संतुलन के संदर्भ में किया है।

चिली की वादियों में लद्दाख की शांतिः ड्रबपोन ओत्जर रिनपोचे

कल्पना कीजिए, हिमालय की गोद में बसे लद्दाख से कोई व्यक्ति हज़ारों मील दूर दक्षिण अमेरिका के चिली पहुँचता है और वहाँ के लोगों को 'ध्यान' का महत्त्व समझाता है। ड्रबपोन

ओत्जर रिनपोचे (Drubpon Otzer Rinpoche) ने यही कर दिखाया है। उनके लिए बुद्ध की शिक्षाएँ केवल किताबों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे एक ऐसी औषधि हैं जो किसी भी संस्कृति के व्यक्ति के घाव भर सकती है। जब उनसे उनके इस सफ़र के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा :

"जब चिली जाने का अवसर मिला, तो मुझे लगा कि बुद्ध की शिक्षाओं को दूसरों के साथ साझा करने का यह सही समय है। हम ऐसे समय में रह रहे हैं जहाँ प्रगति के बावजूद कई लोग तनाव, उदासी और अकेलेपन का सामना करते हैं। मेरा गहरा विश्वास है कि बुद्ध की शिक्षाएँ उस दुख को शांति, करुणा और ज्ञान में बदल सकती हैं।"

चिली के कोचीगुआज घाटी (Cochiguaz Valley) में बना स्तूप आज वहाँ शांति का प्रतीक बन चुका है। वहाँ के लोग, जिनकी संस्कृति और भाषा भारत से बिल्कुल अलग है, बुद्ध के विचारों को कैसे अपना रहे हैं? रिनपोचे बताते हैं:

"वे बहुत खुलेपन और ख़ुशी के साथ प्रतिक्रिया देते हैं। मानवीय हृदय हर जगह एक जैसा ही है। लोग 'ध्यान' से, गहराई से प्रभावित होते हैं क्योंकि वे प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं कि 'शमथ' (मन को शांत और स्थिर करने का अभ्यास) और माइंडफ़ुलनेस जैसे अभ्यासों के माध्यम से उनका मन कैसे बदलने लगता है। वे इन अभ्यासों को न केवल शिक्षाओं के रूप में बल्कि एक औषधि एक आशीर्वाद और ख़ुशियों के वास्तविक स्रोत के रूप में देखते हैं।"

रिनपोचे का मानना है कि भारत की यह आध्यात्मिक विरासत वैश्विक संवाद और शांति में सबसे बड़ी भूमिका निभा सकती है। उनके शब्दों में :

"भारत की आध्यात्मिक परम्पराओं में, न केवल एक देश में, बल्कि पूरी दुनिया में शांति लाने की अपार क्षमता है। ऐसे समय में जब लोगों और देशों के बीच इतने संघर्ष और ग़लतफहमियाँ हैं। धैर्य, प्रेम और अहिंसा के ये मूल्य पहले से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। यदि अधिक लोग इस ज्ञान से जुड़ते हैं, तो दुनिया एक शांतिपूर्ण स्थान बन सकती है।"

प्रकृति और बुद्ध : कर्नाटक का 'ईको-नालंदा'

बुद्ध पूर्णिमा का एक और महत्त्वपूर्ण पहलू है, प्रकृति के साथ हमारा सम्बंध। बुद्ध को ज्ञान एक वृक्ष के नीचे मिला था, उनका जन्म और महापरिनिर्वाण भी वृक्षों की छाया में ही हुआ। इसी दर्शन को कर्नाटक में श्री कर्मा समतेनलिंगपा रिनपोचे (Shri Karma Samtenlingpa Rinpoche) धरातल पर उतार रहे हैं। वे बोधिसत्त्व ट्रस्ट के माध्यम से 'कर्मा मॉनेस्ट्री' का संचालन कर रहे हैं, जिसे वे

'ईको-नालंदा' कहते हैं।

100 एकड़ में फैला यह मठ केवल प्रार्थना का स्थान नहीं, बल्कि 700 से अधिक देशी वृक्षों का एक जीवंत वन है। कोविड-19 के भयावह दौर को याद करते हुए श्री कर्मा बताते हैं कि कैसे बुद्ध की शिक्षाओं और प्रकृति के संतुलन ने उन्हें सुरक्षित रखाः

"समाज जब व्यापक घबराहट और डर से गुज़र रहा था, तब हमने यहाँ शांति और संयम का अनुभव किया। हमारे जंगल

की जैव विविधता और इससे मिलने वाली शुद्ध ऑक्सीजन सभी के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हुई। हमारा संगठन 'ज़ीरो-कोविड' रहा। यह जैव विविधता का प्रभाव है; यह जंगल हमारे पूरे तालुक के फेफड़ों के रूप में कार्य करता है।"

उनके लिए पारिस्थितिकी (Ecology) की रक्षा करना ही आधुनिक समय का धर्म है। वे इसे भावी पीढ़ी के साथ जोड़कर देखते हैं :

"मेरे साथ काम करने वाले कई युवा भिक्षु अपनी पढ़ाई के साथ-साथ पारिस्थितिकी की सेवा भी कर रहे हैं। वे इसे 21वीं सदी और इस कलियुग के लिए एक 'धम्म' के रूप में देखते हैं। यह मानवता के लिए एक नई आशा है। पारिस्थितिकी की बहाली हमारे समय की सबसे महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारियों में से एक है।

प्रधानमंत्री मोदी के 'एक पेड़ माँ के नाम' और पर्यावरण संरक्षण के आह्वान से प्रेरित होकर, श्री कर्मा एक बड़ा लक्ष्य लेकर चल रहे हैं :

"हमारा दृष्टिकोण इस संस्था को भारत सरकार के तहत एक 'नेट-ज़ीरो एमिशन' एनजीओ के रूप में स्थापित करना है। 2030 और निश्चित रूप से 2035 तक, हम 1,500 प्राचीन प्रजातियों के पौधे लगाने के प्रयास कर रहे हैं, जिनमें आयुर्वेदिक औषधीय पौधे भी शामिल हैं। यह एक आत्मनिर्भर और अनुकरणीय सामाजिक मॉडल होगा।"

भीतर की शांति से बाहर की शांति तक

बुद्ध पूर्णिमा केवल दीप जलाने या प्रार्थना करने का दिन नहीं है। ड्रबपोन ओत्ज़र रिनपोचे और श्री कर्मा समतेनलिंगपा रिनपोचे की कहानियाँ हमें बताती हैं कि बुद्ध के विचार आज भी उतने ही जीवंत हैं जितने 2500 साल पहले थे।

एक ओर चिली में बैठा व्यक्ति बुद्ध के 'शमथ' से लोगों के मानसिक तनावों को दूर कर रहा है, तो दूसरी ओर कर्नाटक के जंगलों में 'ईको-नालंदा' के ज़रिए प्रकृति के साथ संतुलन बैठाया जा रहा है। ये दोनों ही प्रयास बुद्ध के 'मध्यम मार्ग' की पुष्टि करते हैं।

बुद्ध का संदेश हमें सिखाता है कि "स्वयं पर विजय सबसे बड़ी विजय होती है।" आज के इस संघर्षपूर्ण युग में, बुद्ध पूर्णिमा हमें याद दिलाती है कि शांति की शुरुआत हमारे भीतर से होती है। जब तक हम अपने भीतर के 'युद्ध' को शांत नहीं करेंगे, बाहर की दुनिया में 'बुद्ध' को नहीं खोज पाएँगे।

राजेश रंजन
कुलपति
केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान

बुद्ध पूर्णिमा का उत्सव

आधुनिक युग में बुद्ध की शिक्षाओं की प्रासंगिकता

हर साल हम वैशाख पूर्णिमा मनाते हैं, जिसे बुद्ध पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। यह बुद्ध के जीवन की तीन पवित्र घटनाओं की याद दिलाती है – जन्म, ज्ञान प्राप्ति और महापरिनिर्वाण। आमतौर पर इस अवसर पर, भक्त गोम्पा/मठों में जाते हैं, प्रार्थना करते हैं, फूल, मोमबत्तियाँ और अगरबत्तियाँ चढ़ाते हैं, धार्मिक ग्रंथों का पाठ करते हैं, ध्यान/मेडीटेशन करते हैं और ज़रूरतमंदों को दान देते हैं। इस उत्सव पर भक्त बुद्ध की मुख्य शिक्षाओं पर भी चिंतन करते हैंः करुणा, अहिंसा, प्रज्ञा और सचेतनता, मध्यम मार्ग, चार आर्य सत्य और अष्टांगिक मार्ग। लेकिन इस साल लद्दाख में बुद्ध पूर्णिमा का उत्सव काफी अलग था, क्योंकि उत्सव की शुरुआत बुद्ध के पवित्र अवशेषों, यानी उनके भौतिक अवशेषों के दर्शन से हुई। लोगों के दर्शन-पूजन के लिए केंद्र शासित प्रदेश प्रशासन द्वारा पचहत्तर वर्ष बाद ये अवशेष लद्दाख लाए गए थे।

जैसा कि ऊपर वर्णित है, बुद्ध पूर्णिमा केवल बुद्ध की शाश्वत शिक्षाओं और वर्तमान समय में उनकी प्रासंगिकता पर गहराई से विचार करने का ही दिन नहीं है, बल्कि संघर्षों से जूझती दुनिया में उन्हें अपने दैनिक जीवन में उतारने का भी दिन है। बुद्ध की अकसर उद्धृत की जाने वाली शिक्षा है- "इस दुनिया में घृणा को घृणा से कभी शांत नहीं किया जा सकता। इसे केवल प्रेम और करुणा से ही शांत किया जा सकता है। यह एक प्राचीन नियम है।" और ऐसी ही कई अन्य शिक्षाएँ आज के समय में बुद्ध के समय की तुलना में कहीं अधिक प्रासंगिक हैं। 'ब्रह्मविहार' का अभ्यास-यानी बुद्ध द्वारा उपदेशित 'उदात्त दृष्टिकोण' या 'दिव्य निवास' – चार मूलभूत सद्गुण हैंः प्रेमपूर्ण करुणा (मैत्री), करुणा, पर-सुख में आनंद (मुदिता), और समभाव (उपेक्षा)। इन्हें 'चार असीम गुण' (अप्प) के नाम से

भी जाना जाता है। ध्यान या मेडीटेशन द्वारा इन सद्गुणों को विकसित करके असीम सकारात्मक भावनाओं को जागृत किया जाता है। ये आदतें मानसिक शांति, भावनात्मक कल्याण और सौहार्दपूर्ण सम्बंधों को बेहतर बना सकती हैं।

आधुनिक समाज में व्याप्त चिंता, तनाव और संघर्षों से मुक्ति पाने के तरीके और साधन भी चार असीम गुणों का अभ्यास करके प्राप्त किए जा सकते हैं। ये समझाते हैं कि दुख का मूल कारण तृष्णा, आसक्ति, भय और अज्ञानता है। आधुनिक समाज में, चिंता अकसर भौतिक और सामाजिक प्रतिस्पर्धा, असफलता के डर और असुरक्षा से जुड़ी होती है। माइंडफुलनेस यानी सचेतन (समाधि भावना) रहने का अभ्यास कर इससे छुटकारा पाया जा सकता है। सचेतन रहने का अभ्यास तनाव और चिंता को कम करता है, भावनात्मक स्थिरता में सुधार करता है और एकाग्रता बढ़ाता है। मनुष्य गौतम बुद्ध की शिक्षाओं से प्रेरित छोटे, लेकिन निरंतर अभ्यासों के माध्यम से वर्तमान में रहने की आदत, करुणा और संतुलन को अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल कर सकता है।

बुद्ध द्वारा सिखाया गया 'मध्य मार्ग' (मज्झिमा पटिपदा) आधुनिक दुनिया में भी उतना ही प्रासंगिक है क्योंकि यह अत्यधिक उपभोग, तीव्र तकनीकी बदलावों और उच्च तनाव से भरे इस युग में संतुलन, संयम और सतत जीवन शैली की हिमायत करता है। एक समय था जब बुद्ध द्वारा सिखाए गए मध्य मार्ग का उद्देश्य इंद्रिय-सुख की अति (कामेसुखल्लिकांयोग) और कठोर आत्म-यातना (अत्तकिलमथानुयोग) की अति से बचना था, और इसका अभ्यास करके कोई भी व्यक्ति ज्ञान प्राप्त कर सकता था। यदि कोई व्यक्ति इसी शिक्षा को अपने दैनिक जीवन में लागू करता है, तो यह जीवन में संतुलन लाने में मदद कर सकता है; यह विचारों, कार्यों और जीवन शैली में विरोधी विचारों एवं अति से

बचाता है तथा भावनात्मक स्वास्थ्य और व्यावहारिक ज्ञान दोनों को बढ़ावा देता है।

बौद्ध धर्म अन्योन्याश्रय (आपसी निर्भरता), सभी सजीव प्राणियों के प्रति करुणा और अहिंसा की शिक्षा देकर मनुष्यों और प्रकृति के बीच एक गहरा सम्बंध स्थापित करता है। प्रकृति को मानव जीवन से अलग नहीं, बल्कि एक परस्पर जुड़े हुए अस्तित्त्व के रूप में देखा जाता है। यह समझ जैव विविधता, पर्यावरण और पारिस्थितिक संतुलन के प्रति एक उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करती है। 'प्रतीत्यसमुत्पाद', यानी 'इसके उत्पन्न होने से यह उत्पन्न होता है' का सिद्धांत बौद्ध धर्म का एक मूलभूत सिद्धांत है, जो यह समझाता है कि सभी घटनाएँ कुछ विशेष परिस्थितियों पर निर्भर होकर ही उत्पन्न होती हैं; यह सिद्धांत परस्पर जुड़ाव, कार्य-कारण सम्बंध और दुखों के अंत पर ज़ोर देता है।

आज की पीढ़ी के लिए बुद्ध की शिक्षाओं की आधुनिक प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए, उन्हें ऐसे व्यावहारिक, समावेशी और आधुनिक तरीकों से प्रस्तुत करना महत्त्वपूर्ण है जो समकालीन जीवन और चुनौतियों से जुड़ सकें। बुद्ध की शिक्षाओं को मातृभाषा में उपलब्ध कराने, शिक्षाओं को दैनिक जीवन की स्थितियों से जोड़ने और वास्तविक जीवन के उदाहरणों व कहानियों का उपयोग करने (जो अत्यधिक तकनीकी या कर्मकांडीय स्पष्टीकरणों से मुक्त हों), तथा बौद्ध सिद्धांतों को शैक्षिक पाठ्यक्रम में एकीकृत करने जैसे कई तरीकों में से, बुद्ध की शिक्षाओं के व्यावहारिक पहलुओं को प्रसारित करने का सबसे महत्त्वपूर्ण तरीका डिजिटल मीडिया और प्रौद्योगिकी का उपयोग हो सकता है—जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, पॉडकास्ट और यूट्यूब, मोबाइल ऐप्स, ऑनलाइन

महाबोधि मंदिर, बोधगया, भारत

व्याख्यान और संवादात्मक चर्चाएँ, गूगल मीट आदि।

अंत में, इस चर्चा का समापन बुद्ध द्वारा 'कलामा सुत्त' में दिए गए उपदेश के साथ करना ही उचित होगा। यह कलामा गाँव के लोगों की कहानी है, जो अलग-अलग शिक्षकों द्वारा अलग-अलग सत्यों का दावा किए जाने से भ्रमित थे लेकिन बुद्ध ने कलामा के लोगों से यह नहीं कहा कि वे उन पर विश्वास करें। इसके बजाय, उन्होंने कुछ अलग ही हटकर बात कहीः "किसी भी बात को केवल इसलिए स्वीकार न करें कि आपने उसे सुना है; न इसलिए कि वह परम्परा है; न इसलिए कि वह शास्त्र में लिखी है; न इसलिए कि उसे किसी बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा है; और न ही इसलिए कि मैंने उसे कहा है।" इसके विपरीत, उन्होंने सिखाया—अवलोकन करें, चिंतन करें, अनुभव करें, और अपनी स्वयं की बुद्धि से समझें। यदि कोई बात लालच, क्रोध, घृणा या हानि की ओर ले जाती है—तो उसे अस्वीकार कर दें। यदि कोई बात दयालुता, करुणा, स्पष्टता और शांति की ओर ले जाती है—तो उसे अपना लें। यह शिक्षा आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। चूंकि हम सभी एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जो विचारों, शोर-शराबे, भ्रामक धारणाओं और गलत सूचनाओं से भरी हुई है, इसलिए कलामा सुत्त हमें याद दिलाता है कि आँख मूंदकर किसी का अनुसरण न करें; बिना प्रश्न किए विचारों को मानने न लगें; मान्यताओं को केवल विरासत के रूप में स्वीकार न करें—बल्कि उनकी जाँच-पड़ताल करें। अपने स्वयं के अनुभव और अपने अंतर्ज्ञान पर भरोसा करें।

बीटिंग रिट्रीट

समारोह स्थल से डिजिटल प्लेटफॉर्म तक

हर साल, बीटिंग रिट्रीट समारोह गणतंत्र दिवस समारोह का एक भव्य और भावुक समापन होता है, जो भारत की समृद्ध सैन्य परम्पराओं, अनुशासन और सांस्कृतिक भावना को दर्शाता है। यह समारोह भारत की सैन्य संगीत विरासत और देशभक्ति के गौरव का एक जीवंत प्रदर्शन बन गया है। इस साल का बीटिंग रिट्रीट अपनी मनमोहक संरचनाओं और सेना, नौसेना, वायु सेना और केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल (CAPF) बैंडों के जोश भरे प्रदर्शनों के लिए खास रहा। सेनाओं द्वारा बनाई गई संरचनाओं में 'ऑपरेशन सिंदूर', 'मत्स्य यंत्र', 'वंदे मातरम' के 150 साल और अन्य शामिल थे। इस समारोह में इतिहास, रचनात्मकता और राष्ट्रीय भावना का सुंदर मेल देखने को मिला। अब, जब बीटिंग रिट्रीट के संगीत और दृश्य वेव्स ओटीटी (WAVES OTT) पर उपलब्ध हो गए हैं, तो यह प्रतिष्ठित अनुभव कर्तव्य पथ के समारोह स्थल से निकलकर डिजिटल दुनिया में पहुँच गया है। इस पहल से देश भर के नागरिक भारत के सशस्त्र बलों की भावना को कभी भी, कहीं भी फिर से महसूस कर सकते हैं और उसका जश्न मना सकते हैं।

Watch on

WAVES

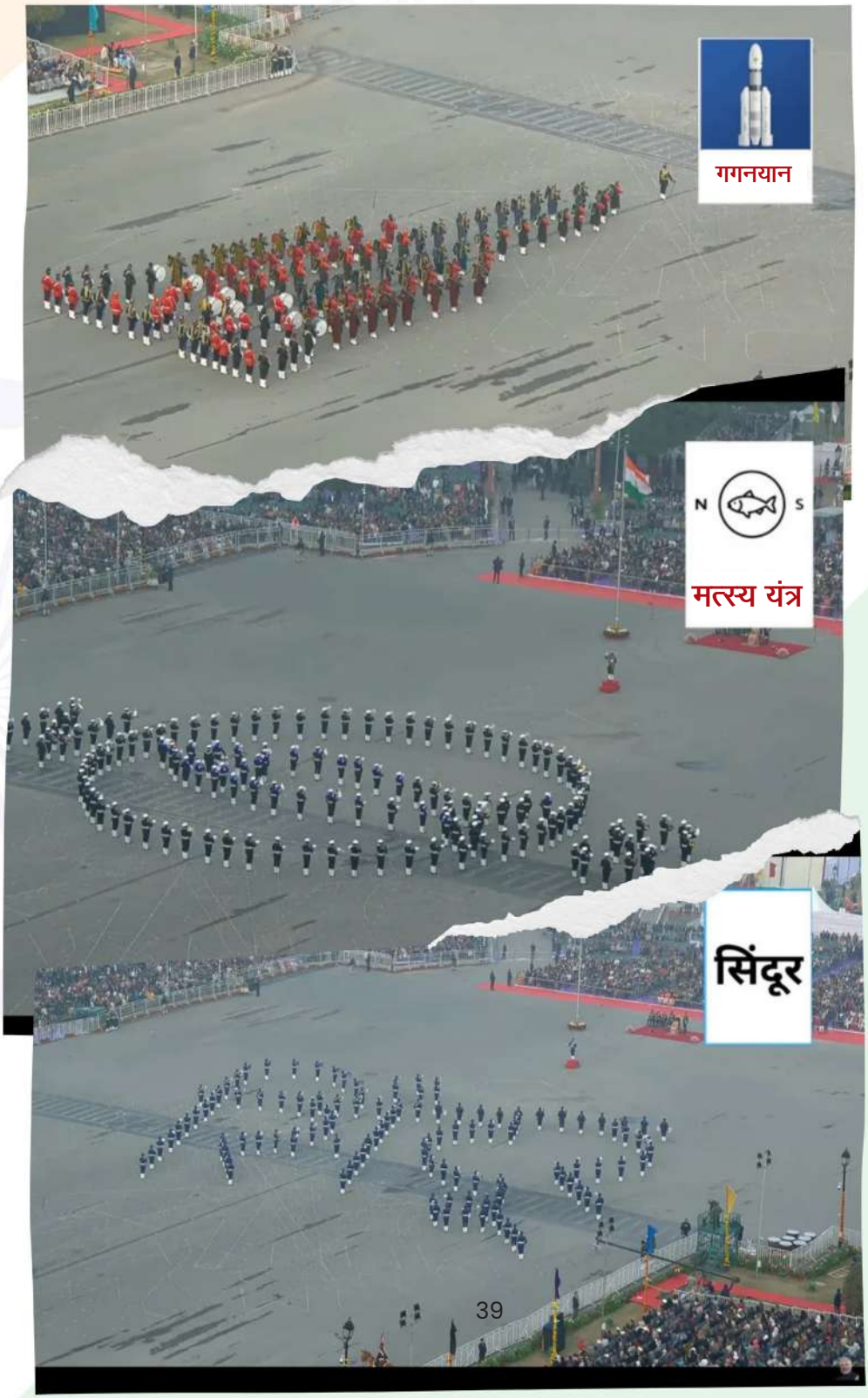
गगनयान
N
S
मत्स्य यंत्र
सिंदूर

टकराव से सह-अस्तित्व की ओर

भारत का प्रकृति संरक्षण मॉडल

भारत की संरक्षण की कहानी अब सिर्फ संरक्षित क्षेत्रों और सरकारी निर्देशों तक ही सीमित नहीं रह गई है। पूरे देश में, समुदाय और स्थानीय संस्थाएँ इंसानी बस्तियों और प्राकृतिक दुनिया के बीच के सम्बंध को नया रूप दे रही हैं। जैसा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के 133वें एपिसोड में कहा था, "प्रकृति और इंसान अलग नहीं हैं। हम एक-दूसरे के साथी हैं। जब हम प्रकृति को समझते हैं, उसका सम्मान करते हैं, और उसके साथ तालमेल बिठाकर रहते हैं, तो बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।" यह विश्वास अब गुजरात की खारी आर्द्रभूमियों से लेकर छत्तीसगढ़ के घास के मैदानों तक फैले संरक्षण प्रयासों में साफ दिखाई देता है।

कच्छ के फ्लेमिंगोः एक समुदाय का गौरव

गुजरात में कच्छ का रण भारत के सबसे ज़्यादा पारिस्थितिक रूप से विशिष्ट परिदृश्यों में से एक है। हर साल जब बारिश खत्म हो जाती है, तो नमक के मैदान आर्द्रभूमियों में बदल जाते हैं। तब दस लाख से भी अधिक फ्लेमिंगो उसकी ओर आकर्षित होते हैं, जिससे यह इलाका गुलाबी रंग के एक चमकीले वर्ण में रंग जाता है। इसी से इसे 'फ्लेमिंगो सिटी' नाम मिला है। कच्छ मरुभूमि वन्यजीव अभयारण्य, जिसकी स्थापना फरवरी 1986 में हुई थी और जो 7,506.22 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है, भारत का सबसे बड़ा वन्यजीव अभयारण्य है और एशिया के उन बहुत कम स्थलों में से एक है जहाँ बड़े फ्लेमिंगो

(ग्रेटर) और छोटे फ्लेमिंगो (लेसर), दोनों तरह के फ्लेमिंगो प्रजनन करते हैं। इसे 2008 में एक बायोस्फीयर रिजर्व (संरक्षित जैवमंडल) घोषित किया गया था, जिसमें इसकी जैव विविधता के महत्त्व के साथ-साथ यहाँ रहने वाले पारम्परिक समुदायों को भी मान्यता दी गई थी।

स्थानीय आबादी द्वारा फ्लेमिंगो को दिया गया प्यार भरा नाम – 'लाखा जी के बाराती' – सांस्कृतिक संरक्षण के उस बंधन को दर्शाता है जो पीढ़ियों से चला आ रहा है। यह सामुदायिक स्वामित्व कोई आकस्मिक नहीं है; यह इस बात का एक बेहतरीन उदाहरण है कि वन्यजीवों के साथ सांस्कृतिक जुड़ाव किस तरह लम्बे समय तक चलने वाले, ज़मीनी-स्तर के संरक्षण का आधार बन सकता है। समुदायिक-नेतृत्व वाला संरक्षण अब सरकार की जैव विविधता रणनीति का एक मान्यता प्राप्त स्तम्भ बन चुका है।

मानव-हाथी टकराव का प्रबंधनः 'गज मित्र' मॉडल

उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में, जब फसल काटने का मौसम आता है तो हाथियों के झुंड खेती की ज़मीन पर आ जाते हैं। इससे इंसानी जान और जानवरों, दोनों के लिए गम्भीर ख़तरे पैदा हो जाते हैं। एमओईएफसीसी (MoEFCC) ने इस समस्या का एक व्यवस्थित ढाँचे के रूप में समाधान निकाला हैः 'प्रोजेक्ट एलीफेंट' के तहत, 15 राज्यों में 150 हाथी गलियारों (एलीफेंट कॉरिडोर) की ज़मीनी स्तर पर पहचान और पुष्टि की गई है। 2022 में, उत्तर प्रदेश में भारत के 33वें हाथी रिज़र्व – दुधवा-पीलीभीत में तराई हाथी रिज़र्व, जो 3,049 वर्ग किमी में फैला है – की अधिसूचना जारी की गई। इसके साथ ही, मानव-हाथी संघर्ष के प्रबंधन के लिए एक 'फील्ड मैनुअल' (मार्गदर्शिका) भी जारी किया गया।

यही नहीं, 'गज मित्र' जैसी सामुदायिक स्तर की कई पहल सामने आई हैं, जिनके तहत गाँव वाले निगरानी दल बनाते हैं ताकि हाथियों की आवाजाही पर नज़र रखी जा सके और समय पर चेतावनी दी जा सके। जुलाई 2025 में जब असम कैबिनेट ने

'गज मित्र योजना' को स्वीकृति दी तो एक संरचनात्मक रूप से समान मॉडल को औपचारिक मंजूरी मिली। इस योजना के तहत, धान की कटाई के मुख्य मौसम के दौरान ऐसे 80 गाँवों में जहाँ मनुष्य और हाथियों के बीच टकराव हो सकता है, समुदाय-आधारित त्वरित प्रतिक्रिया दलों को तैनात किया गया। इसका मूल सिद्धांत स्पष्ट हैः जब स्थानीय समुदायों को आवश्यक संसाधन और संगठन का सहयोग मिलता है, तो वे मानव और वन्यजीवों के सह-अस्तित्व के सबसे प्रभावी समुदाय साबित होते हैं।

छत्तीसगढ़ में काले हिरण की वापसी

हाल के वर्षों में हुए सबसे उल्लेखनीय पारिस्थितिक सुधारों में से एक है छत्तीसगढ़ के बारनवापारा वन्यजीव अभयारण्य में काले हिरण की वापसी। शिकार, आवास के क्षरण और भूमि-उपयोग में बदलाव के कारण 2017 में इस प्रजाति को स्थानीय रूप से विलुप्त घोषित कर दिया गया था। इसके बाद, छत्तीसगढ़ राज्य वन्यजीव बोर्ड (2021–2026) द्वारा अनुमोदित एक सुनियोजित पाँच-वर्षीय पुनरुद्धार योजना

के तहत इस प्रजाति के संरक्षण का कार्य शुरू किया गया। कुल 77 काले हिरणों को स्थानांतरित किया गया – जिनमें से 50 नई दिल्ली के राष्ट्रीय प्राणी उद्यान से और 27 बिलासपुर के कानन पेंडारी प्राणी उद्यान से लाए गए थे। इस प्रक्रिया में आवास-सुधार के उपाय भी शामिल थे, जैसे कि स्थानीय घास की खेती और पशु चिकित्सा निगरानी। अब यहाँ काले हिरणों की प्रजनन करने वाली आबादी 190 से अधिक हो गई है।

प्रोजेक्ट ग्रेट इंडियन बस्टर्डः क्षेत्र-स्तरीय विज्ञान

ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (GTB), जिसे स्थानीय रूप से 'गोडावण' के नाम से जाना जाता है, आईयूसीएन की सूची में 'गम्भीर रूप से लुप्तप्राय' प्रजाति के रूप में सूचीबद्ध है। जंगल में अब इसके 300 से भी कम जीव शेष बचे हैं। एमओईएफसीसी ने सीएएमपीए (CAMPA) के तहत 'जीआईबी का पर्यावास सुधार और संरक्षण प्रजनन – एक एकीकृत दृष्टिकोण' नामक कार्यक्रम के लिए 33.85 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की है। इस कार्यक्रम के तहत, वन्यजीव संस्थान (भारत) और इंटरनेशनल फंड फॉर हुबारा कंजर्वेशन, अबू धाबी के सहयोग से जैसलमेर के 'सैम' और 'रामदेवरा' क्षेत्रों में प्रजनन केंद्र स्थापित किए गए हैं। 2024 में, क्षतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना प्राधिकरण (CAMPA) ने पाँच-वर्षीय संरक्षण कार्य योजना के लिए अतिरिक्त 77.05 करोड़ रुपयों की मंजूरी दी।

इसके परिणाम अब दिखाई देने लगे हैं। मार्च 2026 में, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन केंद्रीय मंत्री ने घोषणा की कि 'प्रोजेक्ट जीआईबी' अब कैप्टिव ब्रीडिंग (बंदी प्रजनन) के अपने चौथे वर्ष में प्रवेश कर चुका है, और इसके तहत बंदी पक्षियों

की कुल संख्या 70 तक पहुँच गई है। उसी महीने, कैप्टिव ब्रीडिंग से प्राप्त एक अंडे को सड़क मार्ग से 770 किलोमीटर दूर जैसलमेर से गुजरात के कच्छ तक पहुँचाया गया, जहाँ उसे सफलतापूर्वक सेया गया (अंडे को सेना) – यह भारत में अपनी तरह की पहली अंतर-राज्यीय जीआईबी संरक्षण पहल थी।

कच्छ में फ्लेमिंगो से लेकर राजस्थान में बस्टर्ड (गोडावण) तक, भारत की संरक्षण सफलताएँ एक साझा आधार पर टिकी हैं अर्थात वैज्ञानिक सटीकता और सरकारी सहयोग के साथ-साथ सामुदायिक भागीदारी का मेल। केंद्रीय बजट 2025-26 में एमओईएफसीसी (MoEFCC) को 3,412.82 करोड़ रुपये आवंटित किए गए – जो पिछले वर्ष की तुलना में 9 प्रतिशत की वृद्धि है – जिसमें से 450 करोड़ रुपये 'वन्यजीव आवासों के एकीकृत विकास' के लिए निर्धारित किए गए हैं। जब इन संसाधनों को समुदाय-आधारित ढाँचों के माध्यम से उपयोग में लाया जाता है, तो इसका परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली पारिस्थितिक सुधार के रूप में सामने आता है।

पूर्वोत्तर में बाँस का उदय

नवाचार, उद्यम और सशक्तीकरण की गाथाएँ

भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में बाँस हमेशा से एक पेड़-पौधे से कहीं अधिक रहा है। यह दैनिक जीवन का अभिन्न अंग रहा है। इससे घर, टोकरियाँ, पुल, वाद्य यंत्र आदि बनते रहे हैं। पीढ़ियों से इस क्षेत्र के समुदाय बाँस को अपनी संस्कृति के एक अभिन्न अंग के रूप में अपनाते रहे हैं। आज, यह पारम्परिक संसाधन आर्थिक विकास, स्थायित्व और नवाचार के एक शक्तिशाली प्रेरणा के रूप में उभर रहा है।

भारतीय वन अधिनियम में 2017 में हुए संशोधन के बाद इस परिवर्तन में तेज़ी आई। इस संशोधन में बाँस को वृक्षों की श्रेणी से हटा दिया गया। इसके परिणाम स्वरूप, पेड़ों की कटाई और परिवहन पर लगे प्रतिबंधों में ढील मिली। राष्ट्रीय बाँस मिशन के तहत शुरू की गई पहलों के समर्थन से, यह क्षेत्र अब रोज़गार सृजित कर रहा है, महिलाओं को सशक्त बना रहा है और पूरे क्षेत्र में उद्यमशीलता के नए अवसर पैदा कर रहा है।

त्रिपुरा के कारीगरों से लेकर सिक्किम के डिज़ाइनरों तक, नगालैंड के पारम्परिक शिल्पकारों से लेकर टिशू कल्चर के माध्यम से बाँस की उन्नत किस्में विकसित कर रहे मिजोरम के वैज्ञानिकों तक, पूर्वोत्तर का बाँस क्षेत्र उद्यमिता और आत्मनिर्भरता का एक उल्लेखनीय अध्याय लिख रहा है। प्रशिक्षण, अनुसंधान केंद्रों और बाज़ार सम्पर्कों के लिए सरकारी समर्थन ने इस क्षेत्र को भारत के 'हरित स्वर्ण' केंद्र के रूप में उभरने में और भी मज़बूती प्रदान की है।

त्रिपुरा में बदलाव का सूत्रधार

बाँस मिशन के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सहायता के माध्यम से त्रिपुरा की पारम्परिक शिल्पकला व्यापक बाज़ारों तक पहुँच रही है। त्रिपुरा के गोमती जिले के बिजय सूत्रधार, जो लगभग 25 वर्षों से बाँस के साथ काम कर रहे हैं, अब पानी की बोतलों और चाय के कप से लेकर सजावटी वस्तुओं तक बाँस के लगभग 80 उत्पाद बनाते हैं। 2017 के बाद प्रतिबंधों में ढील से उनके काम और बाज़ार तक पहुँच में काफी सुधार हुआ है। जैसा कि बिजय सूत्रधार बताते हैं, *"पहले हमें अपने सामान के लिए परिवहन और बाँस प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था क्योंकि यह वन विभाग के अंतर्गत आता था। अब हमें यह आसानी से मिल जाता है। अब हम बहुत खुश हैं। मैं सरकार का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि उन्होंने हमारी मदद की।"*

अब उनकी कम्पनी में महिलाएँ कार्यरत हैं और थोक विक्रेताओं के माध्यम से दिल्ली, मुंबई, केरल और यहाँ तक कि अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों में भी उत्पादों की आपूर्ति करती हैं।

दक्षिण त्रिपुरा के एक अन्य कारीगर प्रदीप चक्रवर्ती बताते हैं कि कैसे प्रौद्योगिकी पारम्परिक बाँस उद्योगों को नया रूप दे रही है। उनका उद्यम बैग, फाइल कवर और आभूषण बॉक्स सहित लगभग 150 प्रकार के उत्पाद बनाता है। अपने उद्यम की वृद्धि के बारे में बात करते हुए वे कहते हैं, *"पहले मैं सब कुछ हाथ से बनाता था। अब मैं मशीनों का इस्तेमाल करता हूँ, और मेरे साथ काम करने वाले लोगों को हर महीने एक निश्चित आय मिलती है।*

फिलहाल, मेरे उत्पाद स्थानीय स्तर पर बिकने के साथ-साथ त्रिपुरा के बाहर भी बिकते हैं, उदाहरण के लिए केरल, असम, बेंगलुरु, दिल्ली, जबलपुर आदि में।"

बाँस नवाचार के माध्यम से सिक्किम की सतत विकास यात्रा

गंगटोक में *लगस्तल बैम्बू एंटरप्राइज* की संस्थापक चेमी भूटिया ने फैशन की पढ़ाई छोड़कर बाँस आधारित इंटीरियर और उत्पाद डिज़ाइन की ओर रुख किया। उनका दृष्टिकोण स्थायित्व और स्थानीय संसाधनों पर केंद्रित है। उनकी कम्पनी फर्नीचर, लाइटिंग सॉल्यूशन, सजावटी सामान और उपयोगी वस्तुएँ बनाती है। इस पूरी प्रक्रिया में, नवीन रीसाइक्लिंग प्रणाली के माध्यम से कम-से-कम अपशिष्ट प्राप्त होता है।

नीतिगत समर्थन के प्रभाव पर विचार करते हुए, चेमी भूटिया कहती हैं, *"जब केंद्र सरकार ने बाँस नीति में बदलाव किया, तो इससे पूर्वोत्तर में हम जैसे कई लोगों को फायदा हुआ। मैं भी उस नीतिगत बदलाव से लाभान्वित होने वालों में से एक हूँ।"* अपने काम के पीछे के दर्शन के बारे में बात करते हुए, वह बताती हैं, *"हम पारम्परिक विचारों और ज्ञान का उपयोग करते हैं और उन्हें बाज़ार की माँग के आधार पर आधुनिक उत्पादों में परिवर्तित करते हैं।"*

उनके उद्यम ने प्रशिक्षण और रोज़गार के माध्यम से लगभग दो सौ लोगों के लिए आजीविका के अवसर पैदा किए हैं।

नगालैंड की पारम्परिक हस्तकलाओं को नए बाज़ार और अवसर की प्राप्ति

नगालैंड का बाँस उद्योग सांस्कृतिक विरासत और उद्यमशीलता के अद्भुत संगम को दर्शाता है। *खोलो क्रिएटिव क्राफ्ट* के खोलो नारो को अपने पिता से बाँस शिल्प की कला विरासत में मिली

और उन्होंने नगालैंड में बाँस की प्रचुरता से प्रेरित होकर इसे एक आधुनिक उद्यम में बदल दिया। उनके उत्पादों में स्वदेशी तकनीकों के साथ समकालीन फिनिशिंग और डिज़ाइन का संयोजन है। प्रक्रिया को समझाते हुए वह कहते हैं, *"सितम्बर, अक्तूबर या नवम्बर के महीनों में जंगल से कच्चा बाँस निकाला जाता है, जिसे फिर बाँस प्रसंस्करण संयंत्र में ले जाया जाता है और आगे की प्रक्रिया के लिए स्टॉक में रखा जाता है। प्रसंस्करण किए गए बाँस को फिर हमारी पसंद के अनुसार, हमारे डिज़ाइन के अनुरूप उपयुक्त आकारों में काटा जाता है। डिज़ाइन के अंतिम टुकड़े को फिटिंग, स्मूथिंग और फिर रंगाई की प्रक्रिया से गुजारा जाता है, जिससे अंतिम उत्पाद तैयार होता है।"*

मिजोरम में वैज्ञानिक प्रयासों द्वारा बाँस आधारित अर्थव्यवस्था का सशक्तीकरण

पूर्वोत्तर में बाँस आधारित अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने में वैज्ञानिक नवाचार भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मिजोरम में, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (ICFRE) के अंतर्गत बाँस और रतन केंद्र उत्पादकता और स्थायित्व में सुधार के लिए बाँस के टिशूज़ के संवर्धन की प्रौद्योगिकी को बढ़ावा दे रहा है।

वैज्ञानिक-डी और केंद्र के प्रमुख संदीप यादव कहते हैं, *"बाँस के टिशूज़ के संवर्धन से प्रयोगशाला की रोगाणु-मुक्त परिस्थितियों में आर्थिक रूप से महत्त्वपूर्ण बाँस प्रजातियों के पौधे तैयार करने में मदद मिलती है। इस तकनीक का उपयोग करके, किसान बड़ी संख्या में उन्नत किस्में प्राप्त कर सकते हैं और ऐसे बागान लगा सकते हैं जो उद्योगों की ज़रूरतों को पूरा कर सकें।"* उन्होंने यह भी कहा, *"हमारा केंद्र बाँस के टिशूज़ के संवर्धन और बाँस प्रबंधन से सम्बंधित किसानों तथा अन्य हितधारकों के लिए प्रतिवर्ष कई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है।"*

भारतीय वन अधिनियम में वर्ष 2017 में हुए ऐतिहासिक संशोधन ने पूर्वोत्तर भारत के किसानों, कारीगरों और उद्यमियों के लिए नए अवसर खोल दिए। आज बाँस केवल एक पारम्परिक संसाधन से भी आगे बढ़कर नवाचार, रोज़गार और आत्मनिर्भरता का स्रोत बन गया है। कारीगरों और उद्यमियों से लेकर वैज्ञानिकों तक, इस क्षेत्र के लोग सृजनशीलता और कड़ी मेहनत के माध्यम से बाँस को एक नई पहचान दे रहे हैं और पूर्वोत्तर के 'हरे सोने' को सतत विकास और उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक बना रहे हैं।

संजय रस्तोगी
महानिदेशक
राष्ट्रीय अभिलेखागार

अभिलेखीय विरासत

भोजपत्र से डिजिटल संरक्षण तक

भारत में ज्ञान परम्परा अनूठी रही है। सदियों से पांडुलिपियों का लेखन एवं उनका संरक्षण होता रहा है। प्राचीन काल में स्मृति के माध्यम से ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरित होता रहा। तत्पश्चात भोजपत्र, ताड़ पत्र, ताम्रपत्र और बाद में काग़ज़ पर इसका लेखन एवं संरक्षण हुआ। समय क्रम के साथ इसके संरक्षण का स्वरूप भी बदला और अब यह माइक्रोफ़िल्म से आगे निकलकर डिजिटल युग में प्रवेश कर चुका है।

राष्ट्रीय अभिलेखागार ने प्रधानमंत्री जी के विज़न 'विरासत भी, विकास भी' को आगे बढ़ाते हुए विश्व का सबसे बड़ा डिजिटाइज़ेशन कार्यक्रम चलाया है। अभी तक लगभग 20 करोड़ पृष्ठों को डिजिटाइज़ कर अभिलेखागार के पोर्टल 'abhilekh-patal.in' पर उपलब्ध कराया जा चुका है जिसे विश्व के किसी भी स्थान से देखा जा सकता है।

यह डिजिटलीकरण भारत के ज्ञान संसाधनों के पुनर्संगठन का प्रतीक है। इसमें 7वीं शताब्दी की गिलगित पांडुलिपियों से लेकर 1857 की क्रांति तथा स्वतंत्रता संग्राम से सम्बंधित दस्तावेज़ भी उपलब्ध हैं। भारत की इस विशाल ऐतिहासिक परम्परा को सहेजने और इसकी उपलब्धता सुनुश्चित करने का जो कार्य अभिलेखागार कर रहा है, उससे न केवल शोध को गति मिल रही है बल्कि नई पीढ़ी को भी अपनी जड़ों से जुड़ने का अवसर मिल रहा है।

यह पहल 'डिजिटल इंडिया' के व्यापक दृष्टिकोण के अनुरूप है जिसका उद्देश्य तकनीक के माध्यम से सेवाओं और सूचनाओं को सुलभ बनाना है। 'अभिलेख पटल' ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का सशक्त उदाहरण है; जहाँ ऐतिहासिक जानकारी अब किसी विशेष संस्थान तक सीमित न रहते हुए सभी नागरिकों के लिए उपलब्ध है। यह डिजिटल समावेशन को बढ़ावा देता है और शिक्षा, अनुसंधान तथा नवाचार को नई दिशा देता है।

इस विशिष्ट एवं विशाल कार्यक्रम को सम्पूर्ण रूप से क्रियान्वित करने के लिए तकनीक का पूर्ण एवं अधिकतम समावेश आवश्यक था। इसी क्रम में, वर्तमान में AI की बढ़ती प्रासंगिकता को देखते हुए

गिलगित पांडुलिपियाँ

अभिलेखागार ने एक AI टूल का निर्माण किया है जिसके माध्यम से दस्तावेज़ों की खोज में आसानी होगी। यद्यपि यह अभी भी विकसित हो रहा है, लेकिन इसकी शुरूआत ने एक नई दिशा प्रदान की है।

'अभिलेख पटल' का इंटरफेस सरल और सहज है। इसे आम उपयोगकर्ता भी आसानी से उपयोग कर सकता है। इसमें कीवर्ड सर्च, श्रेणी आधारित ब्राउजिंग और दस्तावेज़ों के डिजिटल व्यू जैसी सुविधाएँ हैं। अर्थात यह शोधार्थियों, छात्रों और इतिहास प्रेमियों सभी के लिए उपयोगी है। इस कार्य हेतु डिजिटाइजेशन प्रक्रिया ओवर हेड स्कैनर के माध्यम से की जाती है तथा इसे टिफ (tiff), जेपीजी (jpg) एवं पीडीएफ (pdf) में परिवर्तित कर क्लाउड में संरक्षित किया जाता है। इसका उपयोग न केवल आसान है बल्कि दुनिया के किसी भी स्थान से इस तक पहुँचा जा सकता है। इसके फलस्वरूप शोधर्थियों को अब राष्ट्रीय अभिलेखागार आने की आवश्यकता नहीं है। इससे उपयोगकर्ताओं को बड़ी आसानी हुई है।

इस कार्य में निःसंदेह अनेक चुनौतियाँ हैं। दस्तावेज़ों का जीर्ण-शीर्ण अवस्था में होना और लिखा हुआ स्पष्ट न होना, जिसे पढ़ने योग्य बनाना कठिन कार्य है। साथ ही सर्वर कार्य भी चुनौतीपूर्ण है। राष्ट्रीय अभिलेखागार ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए वैज्ञानिक पद्धति से उपचार और संरक्षण करते हुए सर्वर को अधिक सक्षम बनाया है।

राष्ट्रीय अभिलेखागार में संरक्षित अभिलेख भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परम्परा को दर्शाते हैं जिसमें से कुछ का उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है।

गिलगित पांडुलिपियाँ (सातवीं सदी)- भारत की ये विश्व धरोहर भोज-पत्र पर लिखी गई हैं एवं अपने मूल रूप में संरक्षित हैं। इनमें बौद्ध धर्म, दर्शन और प्राचीन भारत के मध्य एशिया से सांस्कृतिक सम्बंधों की झलक मिलती है। ये पांडुलिपियाँ संस्कृत, चाइनीज़, कोरियन, मंगोलियन, मांचू एवं तिब्बतन भाषा के विकास को भी दर्शाती हैं। ये प्रतियाँ यहाँ न केवल मूल स्वरूप में संरक्षित हैं, बल्कि इनका प्रकाशन भी किया जा चुका है।

श्री भूवलय (आठवीं सदी)– जैन धर्म एवं दर्शन से सम्बंधित यह ग्रंथ संख्यात्मक कोड में लिखा गया है। इस संख्यात्मक कोड की रचना 729 (27×27) वर्गों के एक ग्रिड के रूप में की गई है। साहित्य का यह अजूबा 6 लाख छंदों का संग्रह है। कुमदेंदु मुनि

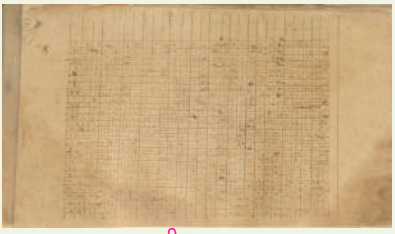

श्री भूवलय

द्वारा कन्नड़ में रचित यह ग्रंथ आज भी शोधार्थियों के लिए एक रहस्यपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण अध्ययन का विषय बना हुआ है।

रानी लक्ष्मीबाई– रानी लक्ष्मीबाई का स्थान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अत्यंत गौरवपूर्ण है। इन दस्तावेज़ों में ब्रिटिश शासन के साथ उनके संघर्ष, पत्राचार, प्रशासनिक निर्णय और 1857

के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान की घटनाओं का प्रामाणिक विवरण मिलता है। यहाँ उल्लेखनीय है कि रानी लक्ष्मीबाई ने डलहौज़ी की हड़प नीति को अस्वीकार कर दिया और कहा कि "झाँसी के लोग इसे स्वीकार नहीं करेंगे"। ये अभिलेख उनके साहस और नेतृत्त्व को ऐतिहासिक रूप से स्थापित करते हैं।
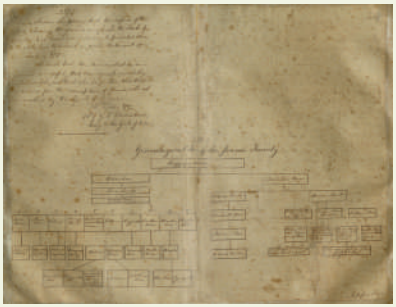
नेताजी सुभाष चंद्र बोस– राष्ट्रीय अभिलेखागार में संरक्षित नेताजी सुभाष चंद्र बोस से सम्बंधित दस्तावेजों में आज़ाद हिन्द फौज, विदेशों के साथ उनके सम्पर्क, भाषणों और रणनीतियों से जुड़े दस्तावेज़ शामिल हैं। इतना ही नहीं, उनके जीवन के अनछुए पहलू जैसे जानकीनाथ बोस का अपनी डायरी में उनका उल्लेख करना, सिविल सेवा में

The successful candidates are shown below in order of merit, together with their provinces of origin, preferences as to provinces and the local Governments which have asked for them :—

Name	Province of origin	Personal preferences	Local Governments by which asked for
1. [illegible]	Ceylon	Madras, Bihar and Orissa, Burma, Upper Bengal, Bengal and Assam, Bombay.	Madras.
2. [illegible]	(European)	(Not intimated)	Bengal, Bihar and Orissa, Central Provinces.
3. [illegible]	Baroda State	Bombay, Bihar and Orissa, Bengal and Assam.	Bengal, Bihar and Orissa (as an alternative.)
4. [illegible]	Orissa	Bombay, Upper Bengal, Madras, Bihar and Orissa, Bengal and Assam, Burma.	...
5. [illegible]	Bombay	Bombay, Upper Bengal	...
6. [illegible]	[illegible] State (Bombay)	Bombay, Upper Bengal, Bihar and Orissa, Madras, Bengal and Assam, Burma.	Bihar and Orissa.

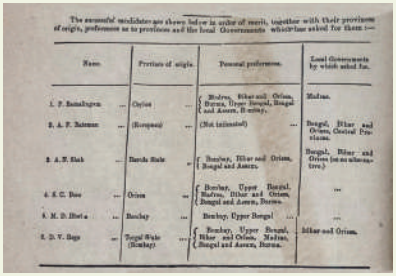

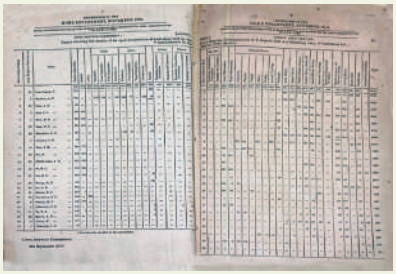

चयन और इस्तीफा देना तथा आज़ाद हिन्द फौज का नेतृत्त्व करना आदि उल्लेखनीय है।

मदन मोहन मालवीय– मदन मोहन मालवीय आज़ादी के ऐसे नायकों में थे जिन्होंने न केवल आज़ादी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई बल्कि शिक्षा एवं समाज

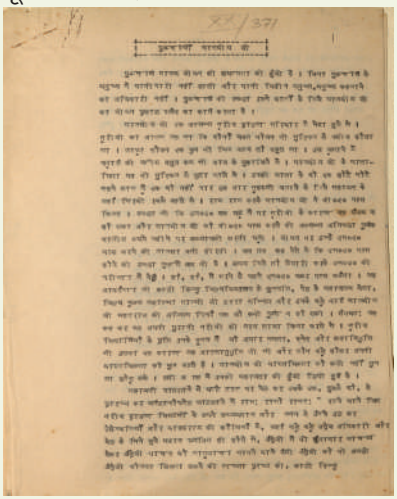

श्री भगवत गीता माला

सुधार में अग्रणी रहे। इन दस्तावेज़ों में उनके शिक्षा सुधार के प्रयास, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसे संस्थानों के निर्माण में उनकी भूमिका का विस्तृत विवरण मिलता है।

संविधान सभा– भारत का संविधान विश्व में अनूठा है और इसका निर्माण संविधान सभा में हुए व्यापक और गहन विचार-विमर्श का परिणाम है। ये अभिलेख भारत के लोकतंत्र की नींव के सबसे महत्त्वपूर्ण साक्ष्य हैं, जिनमें संविधान निर्माण के दौरान विभिन्न दृष्टिकोणों, चर्चाओं और ऐतिहासिक निर्णयों का विस्तृत विवरण उपलब्ध है, जो आज के भारत के शासन तंत्र की आधारशिला हैं।

ये अभिलेख केवल इतिहास के दस्तावेज़ नहीं, बल्कि राष्ट्र की स्मृति, चेतना और आने वाली पीढ़ियों के लिए

LEGISLATIVE ASSEMBLY BIHAR

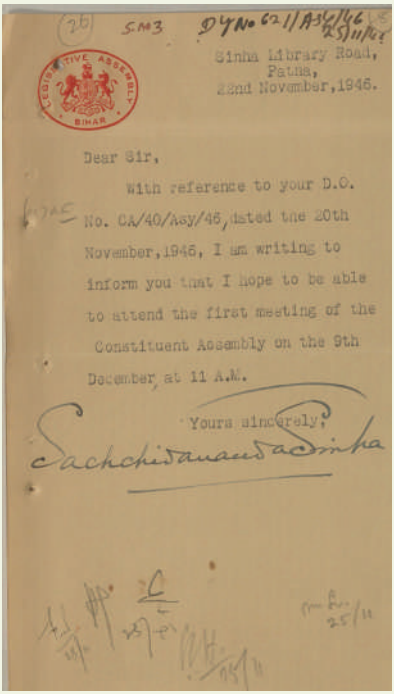

Sinha Library Road,
Patna,
22nd November,1946.

Dear Sir,

With reference to your D.O. No. CA/40/Asy/46, dated the 20th November,1946, I am writing to inform you that I hope to be able to attend the first meeting of the Constituent Assembly on the 9th December, at 11 A.M.

Yours sincerely,

Sachchidanand Sinha

प्रेरणा का जीवंत स्रोत हैं। आवश्यकता आज इस बात की है कि राष्ट्रीय अभिलेखागार ही नहीं, भारत का प्रत्येक नागरिक इनको सहेजने के अभियान का हिस्सा बने।

यूरोपियन गर्ल्स मैथेमैटिकल ओलम्पियाड

बेटियों ने लहराया भारतीय परचम

महज़ चंद घंटे का सीमित समय, गणित की जटिल पहेलियाँ और दुनिया भर की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं से मुक़ाबला! चुनौती तो वाक़ई हिमालय जैसी थी। लेकिन फ्रांस के बोरदो में आयोजित 'यूरोपियन गर्ल्स मैथेमैटिकल ओलम्पियाड' (EGMO) में भारत की चार होनहार बेटियों ने अपनी मेधा का शानदार और ऐतिहासिक परिचय दिया। इस वैश्विक मंच पर भारत ने अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए छठा स्थान हासिल किया।

टीम ने एक **स्वर्ण**, एक **रजत** और एक **कांस्य** पदक जीतकर इतिहास रच दिया। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में इन बेटियों की सफलता को पूरे देश के लिए गौरव का क्षण बताया। कठिन प्रशिक्षण शिविर से लेकर अंतरराष्ट्रीय मंच तक का यह सफ़र इन छात्राओं की कड़ी मेहनत, एकाग्रता और अटूट जुनून की कहानी है।

"भले ही यह गोल्ड मेडल मैंने जीता है, लेकिन मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहूँगी कि यह एक टीम एफ़र्ट है। हमारी छठी रैंक और पदक, हम सबने साथ मिलकर हासिल किए हैं। प्रतियोगिता के लिए निकलने से पहले ट्रेनिंग कैम्प में हमने साथ मिलकर कठिन समस्याओं को हल किया और एक-दूसरे की मदद की। क्लासेज़ और सामूहिक गतिविधियों ने हमें एक इकाई के रूप में तैयार किया। इस मेडल का श्रेय उन सभी को जाता है जिन्होंने इस तैयारी में हमारा साथ दिया।"

-श्रेया मुंधड़ा (मुंबई) – *स्वर्ण पदक विजेता*

"शुरुआत में ओलम्पियाड की समस्याओं के समाधान समझना मेरे लिए कठिन था, लेकिन चेन्नई और होमी भाभा सेंटर के कैंपों में मेंटर्स और वरिष्ठ छात्रों से बातचीत ने मेरा दृष्टिकोण बदल दिया। वहाँ मेंटर्स हर छात्र की विशिष्ट ज़रूरतों पर ध्यान देते थे। अंतरराष्ट्रीय मंच पर अलग-अलग देशों के छात्रों से मिलकर उनके ट्रेनिंग के तरीक़ों को जानना रोमांचक था। प्रतियोगिता के दौरान मेरा पूरा ध्यान केवल 'गणित के सौन्दर्य' पर था, न कि जीत-हार पर। मुझे विश्वास था कि मेरा समर्पण रंग लाएगा। मुझे उम्मीद है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लड़कियों को सफल होते देख देश की अन्य बेटियाँ भी अपने जुनून का पीछा करने के लिए प्रेरित होंगी।"

-संजना फिलो चाको (तिरुवनंतपुरम) – *रजत पदक विजेता*

"परीक्षा शुरू होने से पहले तक दबाव रहता है, लेकिन जैसे ही ओलम्पियाड शुरू होता है, गणित के प्रति मेरा प्रेम हावी हो जाता है। उन साढ़े चार घंटों में, मैं केवल समस्या की सुंदर संरचनाओं का आनंद लेती हूँ। मुझे टीम में चुने जाने की उम्मीद नहीं थी, मैं बस सीखने और दोस्त बनाने गई थी। हमारे मेंटर्स ने पूरी प्रक्रिया के दौरान हमें शांत और ज़मीन से जुड़े रहने में मदद की। इस साल भारत की छठी रैंक रातों-रात नहीं आई है; यह वर्षों से इस ओलम्पियाड में भाग ले रहे लोगों के संचयी प्रयास का परिणाम है। हर बार हमने थोड़ा बेहतर किया और आज हम यहाँ हैं। मुझे उम्मीद है कि यह परिणाम देश के और भी छात्रों को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करेगा।"

-शिवानी भरत कुमार (चेन्नई) – *कांस्य पदक विजेता*

"इन चरणों ने मुझे न केवल गणित सिखाया, बल्कि धैर्य और विफलता को स्वीकार करना भी सिखाया। भारत का प्रतिनिधित्व करना एक बहुत बड़ा सम्मान है। होमी भाभा सेंटर और हमारे मेंटर्स ने हमें बेहतरीन ट्रेनिंग दी। प्रतियोगिता ने मुझे सिखाया कि सफलता और असफलता एक ही यात्रा के हिस्से हैं। पहले मुझे लगता था कि वैश्विक मंच पर प्रतिनिधित्व करना असम्भव है, लेकिन इस जीत ने उस धारणा को तोड़ दिया। यह जीत साबित करती है कि यह मंच केवल किसी ख़ास वर्ग या जेंडर के लिए नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए है जो मेहनत करने को तैयार है। अब लड़कियाँ भी बड़े सपने देख सकती हैं।"

-श्रीमयी बेरा (कोलकाता) – *टीम सदस्य*

मृत्युंजय कुमार नारायण
भारत के महारजिस्ट्रार
एवं जनगणना आयुक्त

डिजिटल जनगणना 2027

तेज़, स्मार्ट, समावेशी

भारत में 'जनगणना 2027' की शुरुआत 16 जून, 2025 को आधिकारिक राजपत्र में जनगणना आयोजित करने के लिए केंद्र सरकार की अधिसूचना के प्रकाशन के साथ हुई। आधुनिक काल में यह 16वीं जनगणना है और स्वतंत्रता के बाद आठवीं जनगणना है। यह जनगणना वास्तव में देश के प्रशासनिक और आँकड़ा प्रबंधन इतिहास में एक परिवर्तनकारी मील का पत्थर है। इसमें डिजिटल टेक्नोलॉजी का व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाएगा तथा समूची प्रक्रिया के लिए आँकड़े एकत्र करने तथा प्रबंधन का पोर्टल तैयार करने के उद्देश्य से स्मार्ट फोनों का प्रयोग किया जाएगा।

1872 से आयोजित पिछली जनगणनाओं से भिन्न, यह भारत की पहली जनगणना होगी जो डिजिटल माध्यम से आयोजित की जाएगी। यह काग़ज़ आधारित गणना से प्रौद्योगिकी-संचालित आँकड़ा संग्रह प्रणाली की ओर एक क्रांतिकारी बदलाव का प्रतीक है। यह परिवर्तन केवल प्रक्रियात्मक नहीं है—यह सार्वजनिक नीति और शासन को आकार देने में जनगणना आँकड़ों की उपयोगिता पुनर्परिभाषित करता है।

जनगणना 2027 की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में से एक, इसका पूर्णतः डिजिटलीकरण होना है। पिछली जनगणनाओं में प्रगणक काग़ज़ी अनुसूचियों पर आँकड़े एकत्र करते थे, जिन्हें बाद में एक लम्बी प्रक्रिया के माध्यम से डिजिटाइज़ किया जाता था, जिसमें त्रुटियों और विलम्ब होने की सम्भावना होती थी। इसके परिणामस्वरूप आँकड़ों के संग्रहण और वितरण के बीच अक्सर कई वर्षों का अंतराल हो जाता था। इससे भिन्न, 'जनगणना 2027' में मोबाइल एप्लीकेशन का प्रयोग सीधे फील्ड में प्रगणक के लिए अपने स्मार्टफोन का उपयोग करके आँकड़ों का संग्रहण करना सम्भव बनाता है। इससे डिजिटलीकरण का मध्यवर्ती चरण समाप्त होता है, जिससे दक्षता और विश्वसनीयता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

जनगणना का पैमाना इस तथ्य से समझा जा

सकता है कि 140 करोड़ से अधिक आबादी वाले देश में जनगणना कराना एक विशाल प्रशासनिक और सांख्यिकीय कार्य है। जनगणना में 30 लाख से अधिक प्रगणकों और पर्यवेक्षकों की तैनाती की गई है। डिजिटल डेटा संग्रह देश की विविध भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में एकरूपता सुनिश्चित करता है। डिजिटलीकरण ने जनगणना कार्यों की व्यापकता को और भी बढ़ा दिया है।

तेज़ी से बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य में समयबद्धता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, इसलिए आँकड़ों के संसाधन की गति एक बड़ी सुविधा साबित होगी। केंद्रीय सर्वरों पर वास्तविक समय या लगभग वास्तविक समय में आँकड़ों के आवागमन से डेटासेट की उपलब्धता पहले की तुलना में कहीं अधिक तेज़ी से होगी। पहले जनगणना के परिणाम संकलित और जारी करने में वर्षों लग जाते थे। इसके विपरीत, डिजिटल डेटा संग्रह यह सुनिश्चित करता है कि जानकारी को बहुत तेज़ी से संसाधित, सत्यापित और विश्लेषित किया जा सके।

डिजिटल डेटा संग्रह और अंतर्निहित सत्यापन जाँच से मानवीय त्रुटि कम हो जाती है। उदाहरण के लिए अनिवार्य फ़ील्ड, तार्किक संगति जाँच और स्वचालित अलर्ट अपूर्ण या असंगत प्रविष्टियों को रोकते हैं। ये सभी विशेषताएँ मिलकर 'जनगणना 2027' के स्वच्छ और अधिक विश्वसनीय डेटासेट सुनिश्चित करती हैं। इसके अलावा सटीक गणना ब्लॉक बनाने के लिए डिजिटल मैपिंग का उपयोग दोहराव या चूक की सम्भावना को कम करता है, जिससे सटीकता और आँकड़ों की गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

पारम्परिक जनगणना पद्धतियों की सीमाओं, जैसे कि विलम्ब, उच्च लागत, हस्तलेख व्याख्या सम्बंधी समस्याएँ और डेटा की अशुद्धियाँ- ने इस सुधार की आवश्यकता को जन्म दिया। एक मज़बूत डिजिटल अवसंरचना, नागरिकों और सरकारी अधिकारियों के बीच तकनीकी जागरूकता में वृद्धि भी काग़ज़ आधारित पद्धति से डिजिटल पद्धति में परिवर्तन के लिए एक अतिरिक्त प्रेरक कारक रही है।

'जनगणना 2027' उन्नत प्रौद्योगिकियों के उपयोग पर आधारित

है। जनगणना प्रबंधन और निगरानी प्रणाली (सीएमएमएस) संचालन समन्वय, प्रगति की निगरानी और गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीय मंच के रूप में कार्य करती है। मोबाइल एप्लीकेशन डेटा संग्रह को सुगम बनाते हैं, जबकि डिजिटल ब्लॉक निर्माण स्थानिक सटीकता और कवरेज सुनिश्चित करता है।

इस जनगणना में पहली बार उत्तरदाता स्व-गणना (SE) पोर्टल के माध्यम से अपनी जानकारी भर सकते हैं। यह सुविधा प्रगणक द्वारा घर-घर जाकर जनगणना शुरू करने से 15 दिन पहले तक उपलब्ध रहेगी, जैसा कि सम्बंधित राज्य/केंद्र शासित प्रदेश द्वारा अधिसूचित किया गया है। उत्तरदाता अपनी सुविधानुसार जानकारी भर सकते हैं। प्रक्रिया पूरी होने पर, एक विशिष्ट 11 अंकों की SE ID ('H' से शुरू) जनरेट होगी और प्रदर्शित होगी। SE ID एसएमएस और ईमेल (यदि उपलब्ध हो) के माध्यम से भेजी जाएगी। बाद में, जब प्रगणक घरों का दौरा करेंगे, तो वे SE ID मांगेंगे, उसे दर्ज करेंगे और डेटा जमा करने से पहले जानकारी की पुष्टि करेंगे। इससे प्रगणक को भौतिक रूप से जानकारी एकत्र करने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है, जिससे समय की बचत होती है और प्रक्रिया सरल हो जाती है।

जनगणना अधिनियम, 1948 के प्रावधानों के तहत जनगणना का संचालन

किया जाता है और अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार, डेटा गोपनीय रखा जाता है। संवेदनशील जानकारी की सुरक्षा के लिए सुरक्षित डेटा केंद्र और एन्क्रिप्शन प्रोटोकॉल प्रयोग में लाये जा रहे हैं, जिससे गोपनीयता और डेटा सुरक्षा मानकों का अनुपालन सुनिश्चित होता है।

जनगणना 2027 दो चरणों में आयोजित की जा रही है। जनगणना का पहला चरण, अर्थात् मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना अप्रैल से सितम्बर 2026 के बीच राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों की सुविधानुसार 30 दिनों की अवधि में आयोजित किया जा रहा है, इससे पहले 15 दिनों की स्व-गणना की अवधि होगी। जिन राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में कार्य चल रहा है, उन्होंने अपने-अपने राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में डिजिटल डेटा संग्रह सफलतापूर्वक अपनाया और लागू किया है। दूसरा चरण यानी जनसंख्या गणना, जिसमें परिवारों के सभी सदस्यों की जाति गणना भी शामिल होगी।

डिजिटल माध्यमों से इतनी बड़ी जनगणना को लागू करना विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में अत्यंत चुनौतीपूर्ण है, जहाँ इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल साक्षरता सीमित है। विशाल कार्यबल को देखते हुए प्रगणकों को डिजिटल उपकरणों के उपयोग के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाना भी सुनिश्चित करना एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। आँकड़ों की गोपनीयता और साइबर सुरक्षा जोखिम भी गम्भीर चुनौतियाँ हैं, क्योंकि जनगणना में संवेदनशील व्यक्तिगत जानकारी का संग्रह शामिल है। सार्वजनिक विश्वास बनाए रखने के लिए एन्क्रिप्शन और पहुँच पर सख्त नियंत्रण सहित मज़बूत सुरक्षा उपाय आवश्यक हैं।

विशाल मात्रा में आँकड़ों को सम्भालने के लिए, प्रणाली का तकनीकी स्तर बढ़ाने के लिए मज़बूत बुनियादी ढाँचे और आवश्यक योजना की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता डिजिटल इंटरफेस को मानकीकृत करने और विभिन्न क्षेत्रों में सटीक डेटा संग्रहण सुनिश्चित करने में जटिलताएँ पैदा करती है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सावधानीपूर्वक योजना, मज़बूत संस्थागत समन्वय और निरंतर निगरानी की आवश्यकता है।

जनगणना प्रक्रिया के हर चरण में डिजिटल प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करके 'जनगणना 2027' को पहले से कहीं अधिक तेज, सटीक और समावेशी बनाने का वादा किया गया है। सारांश में 'जनगणना 2027' एक एकीकृत डिजिटल डेटा सिस्टम की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण छलांग है, जिसके परिणामस्वरूप डेटा-आधारित शासन का ढाँचा तैयार होगा। चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं, लेकिन डिजिटल माध्यमों से जनगणना का सफल कार्यान्वयन और तेजी से डेटा उपलब्धता अंततः भारत के अधिक लक्षित विकास और साक्ष्य-आधारित नीति-निर्माण का आधार बनेगी।

डॉ. मीनेश शाह
अध्यक्ष
राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड

भारतीय 'चीज़' की कहानी

परम्परा स्वाद और वैश्विक सफलता

भारत का डेयरी क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका की रीढ़ है। देशभर में 8 करोड़ ग्रामीण परिवार इस पर आश्रित हैं। 2024-25 में भारत में कुल 24 करोड़, 80 लाख टन दूध का उत्पादन हुआ था और इस प्रकार भारत विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश बन गया है तथा समूचे विश्व के दूध उत्पादन का करीब 25 प्रतिशत उत्पादन हमारे ही देश में होता है। भारत में दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता दुनिया में सबसे ज़्यादा है, यहाँ प्रतिदिन 485 ग्राम दूध प्रति व्यक्ति उपलब्ध रहता है। देश में दूध का उत्पादन घरेलू माँग को पूरा करने जितना ही है और इसी कारण से न तो भारत दूध का खास निर्यात कर पाता है और न ही दूध आयात करने की खास ज़रूरत पड़ती है।

दशकों से दूध, घी, मक्खन, दही, चीज़, खोया और परम्परागत मिठाइयों जैसे मुख्य खाद्य पदार्थों ने देश में डेयरी क्षेत्र का परिदृश्य बदल दिया है। इसके बाद ही प्रोसेस्ड चीज़, दही, फ्लेवर्ड मिल्क, आइसक्रीम, हाई प्रोटीन जैसे मूल्यवर्द्धित उत्पाद तथा प्रोबायोटिक डेयरी ड्रिंक्स, हाई प्रोटीन उत्पादों के तेज़ी से चलन में आने के साथ ही उपभोक्ताओं की पसंद में जबरदस्त बदलाव आ गया तथा बाज़ार में नए-नए अवसरों की भरमार आ गई। परम्परागत भारतीय चीज़ का तो देश में सदियों से उत्पादन होता आ रहा है लेकिन उनका उत्पादन और खपत (उपभोग) मुख्यतः स्थानीय स्तर पर ही सीमित रहा और आधुनिक बाज़ारों में ये उत्पाद बहुत कम पहुँच पाते थे। पाश्चात्य शैली के चीज़ का भी करीब बीस वर्ष से उत्पादन और उपभोग हो रहा है। इनमें मोज़्ज़रेला चेडर चीज़, एम्मेंटर या स्विस चीज़, फेटा, रिकोट्टा चीज़ मुख्य रूप से शामिल हैं।

ये चीज़ ज़्यादातर सलाद, पिज़्ज़ा, पास्ता, सैंडविच, बर्गर, रैप्स, केक्स आदि में इस्तेमाल होता है और अब इन पर ज़्यादा ध्यान दिया जाने लगा है। भारत में चीज़ का बाज़ार 2025 में 12,889 करोड़ रुपये का था। समझा जा रहा है कि 2034 तक यह बढ़कर 61,988 करोड़ रुपये तक पहुँच जाएगा तथा इसमें लगभग 20 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर बनी रहने का अनुमान है।

भारत के प्राचीन चीज़ के साथ परम्परा और समुदाय तथा साथ ही आधुनिक पहलों की मनोरंजक कहानी चली आ रही है। चीज़ असल में ताजा और नरम जमा हुआ चीज़ होता है जो भारत के लगभग सभी भागों में विभिन्न व्यंजन बनाने में इस्तेमाल किया जाता है। भारत में चीज़ की कई ऐसी किस्में भी प्रचलित हैं जिनसे विविध उत्पाद तैयार किए जाते हैं। जम्मू में पका हुआ चीज़ 'कलारी' इस्तेमाल होता है जो डोगरा परम्पराओं तथा गुज्जर बकरवाल समुदाय से बहुत गहराई से जुड़ा हुआ है। इसे अक्सर तलकर बड़े मज़े से खाया जाता है। अपनी ज़रूरत के हिसाब से बनाए इस किस्म के चीज़ को गुज्जर बकरवाल समुदाय सदियों से संजोए आ रहा है। इस भौगोलिक क्षेत्र में बकरी के दूध से बना सख्त किस्म का चीज़ 'कुदाम' भी बेहद लोकप्रिय है। हिमालय क्षेत्र में गड़रिया समुदाय के लोग 'चुर्पी चीज़' का सदियों से आनंद लेते आ रहे हैं, यह भी सख्त और हल्के गहरे रंग का होता है। इसे काफी समय तक घर में ही सुरक्षित रखा जा सकता है। माना जाता है कि याक के दूध से बनने वाला चुर्पी चीज़ सामान्य तापमान पर बीस साल तक सुरक्षित रह सकता है। अब इसी चुर्पी चीज़ का उत्पादन विभिन्न प्रकार के दूधों के सम्मिश्रण से किया जाने लगा है। बंगाल में 'बंदेल चीज़' सूखा और करारा होता है तथा इसका स्वाद नमकीन होता है। बंगाल में 'कालिमपोंग' चीज़ की किस्म भी है जो कम सख्त तथा हल्का तीखा होता है तथा पर्वतीय हवा में पकने के कारण इसकी गंध खट्टी-तेज़ाबी और मेवे की गिरी जैसी होती है। इसी तरह का एक विशेष चीज़ 'सूरती' चीज़ होता है जिसे 'टोपली नू' चीज़ भी कहते हैं और यह महाराष्ट्र तथा गुजरात की खास स्पेशलिटी है। यह नरम और मखमली चीज़ जामन मिलाकर जमाया जाता है तथा छोटी-छोटी टोकरियों में रख दिया जाता है जिन्हें टोपली कहते हैं। इस प्रकार रखने से इस चीज़ की सतह एकदम खास प्रकार की रहती है। ये सभी प्रकार के चीज़ केवल खाद्य पदार्थ ही न होकर सांस्कृतिक विरासत, स्थानीय रीति-रिवाजों और समुदायों की विशिष्ट पहचान भी दर्शाते हैं। उनकी अनूठी खूबी इस बात में है कि ये भारतीय समुदायों की विविधता के प्रतीक हैं तथा पाश्चात्य किस्मों के चीज़ के स्वाद भी देते हैं।

भारत के डेयरी उत्पादों को अब विदेशों में भी मान्यता मिलने लगी है। ब्राजील की चौथी विश्व चीज़ (चीज़) प्रतियोगिता, 2026 में भारतीय चीज़ों की कई किस्में, 'गिर गाय घी' और ऊँट

पर आधारित इस उत्सव ने संवाद, खोज और नेटवर्किंग के लिए मंच प्रदान किया।

भारत के डेयरी उद्योग ने आधुनिक टेक्नोलॉजी अपनाने पर काफी बड़ा निवेश किया है तथा वैल्यू चेन में हुए इस व्यापक निवेश से गुणवत्ता और निरंतरता बनाए रखने की पक्की व्यवस्था हो जाती है। कोल्ड चेन लॉजिस्टिक्स अर्थात् तापमान नियंत्रित आपूर्ति शृंखला अपनाने से चीज़ें लगातार ताज़ा बनी रहती हैं तथा वे खराब भी नहीं होतीं, ऑटोमेटिड जाँच प्रणालियों से सामान की हाइजीन यानी साफ़-सफ़ाई अथवा सुरक्षा बनी रहती है। साथ ही पैकिंग के स्मार्ट पैकेज भी खाद्य सामग्री की ताज़गी बनाए रखने में सहायक होते हैं और इन्हें अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। चीज़ उत्पादन में हर चरण पर नवाचार अपनाने से काफी बदलाव आ रहे हैं जिसमें अपनी पसंद का दूध चुनने से लेकर इसे उबालने, जमाने और पैकेजिंग करने तक बेहद सुधरी तकनीकें अपनाई जा रही हैं। उत्पादक प्रामाणिक परम्परागत तरीकों के दूध से बनाए उत्पादों को मूल गुणों, नएपन और खास क्वालिटी के लिए काफी सराहा गया था। इन प्रतियोगिताओं में 30 देशों के प्रतियोगी शामिल हुए थे तथा चीज़ के 2,700 से ज़्यादा नमूने प्रदर्शित किए गए थे और भारत ने वहाँ चार प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते थे। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में साढ़े तीन सौ अंतरराष्ट्रीय जजों को रखा गया था। नोमैडिक (घूमन्तु) फार्म के 'चुर्पी' ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया जबकि एलेफथेरिया के गुलमर्ग चीज़ को सुपर (गोल्ड) मेडल प्रदान किया गया था। साथ ही 'ब्रुनेस्ट' चीज़ ने स्वर्ण पदक तथा काली मिरि चीज़ ने रजत पदक जीता। इस अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय चीज़ों को शामिल कराने में भारत सरकार के पशुपालन और डेयरीपालन विभाग तथा राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड ने अहम भूमिका निभाई थी। ब्राजील के आयोजन में शामिल होने की तैयारी के तौर पर पशुपालन और डेयरी पालन विभाग तथा डेयरी विकास बोर्ड ने भारत की दुग्ध राजधानी आनंद में प्रथम भारतीय चीज़ उत्सव आयोजित किया था। इस आयोजन में भारतीय डेयरी उद्योग और उपभोक्ताओं ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। भारत की चीज़ संस्कृति

से भी संरक्षण करते हैं तथा साथ ही उपभोक्ताओं की बदलती प्राथमिकताओं को ध्यान में रखकर उसी हिसाब से नई किस्में भी बाज़ार में लाते हैं। इन उन्नत तरीकों से उत्पाद की गुणवत्ता बढ़ती है, लागत में कमी आती है तथा मूल्यवर्द्धित डेयरी उत्पाद अधिक उपभोक्ताओं तक पहुँचने लगते हैं। डिजिटल प्लेटफार्मों की बढ़ती लोकप्रियता के कारण परम्परागत चीज़ बनाने वाले भी अब देशभर के बाज़ारों में पहुँचने लगे हैं जिससे उनके उत्पादों को मान्यता मिलती है तथा अपने मूल उत्पादन-स्थान से दूर-दूर तक उनके उत्पादों की माँग बढ़ती है। इन बदलावों का ही नतीजा है कि उत्पादक अब उपभोक्ताओं से जुड़ने लगे हैं तथा उन्हें परम्परागत बाज़ारों तथा कारोबार से अलग हटकर नए अवसर उपलब्ध होने लग गए हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उत्पाद लाना अत्यंत आवश्यक है तथा इसके लिए क्वालिटी बनाए रखना सबसे अहम बात है। इन मानकों को पूरी तरह अपनाकर ही उपभोक्ताओं की अपेक्षाएँ पूरी की जा सकती हैं तथा वैश्विक बाज़ारों में भी इन मानकों का पालन करके ही साख बनाई जा सकती है।

वैश्विक डेयरी बाज़ार तेज़ी से बढ़ रहे हैं तथा हस्त निर्मित और विशेष उत्पादों की माँग भी बढ़ रही है तथा इस समूची प्रक्रिया में स्टार्टअप्स की भूमिका बहुत अहम है। युवा उद्यमियों द्वारा चलाए जा रहे स्टार्टअप्स में इन हस्तनिर्मित और सम्मिश्रण से बनने वाले उत्पादों को नया रूप देने के प्रयोग चलते रहते हैं तथा इन उत्पादों में परम्परागत भारतीय फ्लेवर (स्वाद) के साथ ही वैश्विक तकनीकों का सम्मिश्रण भी रहता है। भारतीय चीज़ रसोई और स्थानीय

समुदायों तक ही सीमित नहीं रह गए हैं। अब इन्हें विश्व स्तर पर मान्यता मिल रही है और ये अपने अनूठेपन, गुणवत्ता और तकीनीकों की विविधता के कारण काफी लोकप्रिय होते जा रहे हैं। सरकार की नीतियों, पशुपालन और डेयरी विभाग की विकासपरक योजनाओं तथा राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के तकनीकी समर्थन से, अंतरराष्ट्रीय मानकों का कड़ाई से पालन करने और स्टार्टअप्स तथा सहकारी समितियों की गतिशीलता के सहारे भारत का डेयरी क्षेत्र अब नए अध्याय की ओर बढ़ रहा है। इसमें घरेलू बाज़ार और अंतरराष्ट्रीय बाज़ार दोनों ही शामिल होंगे। परम्परागत तरीके से बढ़कर वैश्विक मान्यता पाने की यात्रा में भारत के चीज़ में 'लोकल टू ग्लोबल' की समूची भावना निहित है जिससे पता चलता है कि किस प्रकार विरासत और उद्यमशीलता मिलकर गौरव और सम्पन्नता प्राप्त करने का साधन बन सकते हैं।

रवींद्रनाथ टैगोर

संस्कृति और राष्ट्र निर्माण के द्रष्टा

रवींद्रनाथ टैगोर (1861-1941) की अमर विरासत साहित्य, शिक्षा और ग्रामीण विकास में उनके योगदान के माध्यम से पीढ़ियों को प्रेरित करती रहती है। *पोचिशे बोइशाख नोबेल* पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती के अवसर पर, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने मन की बात के 133वें एपिसोड में गुरुदेव को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्हें एक बहुआयामी व्यक्तित्व बताया, जिन्होंने स्थायी संस्थानों का निर्माण किया और गाँवों के लोगों की आजीविका को बनाए रखने वाले उद्योगों का समर्थन किया।

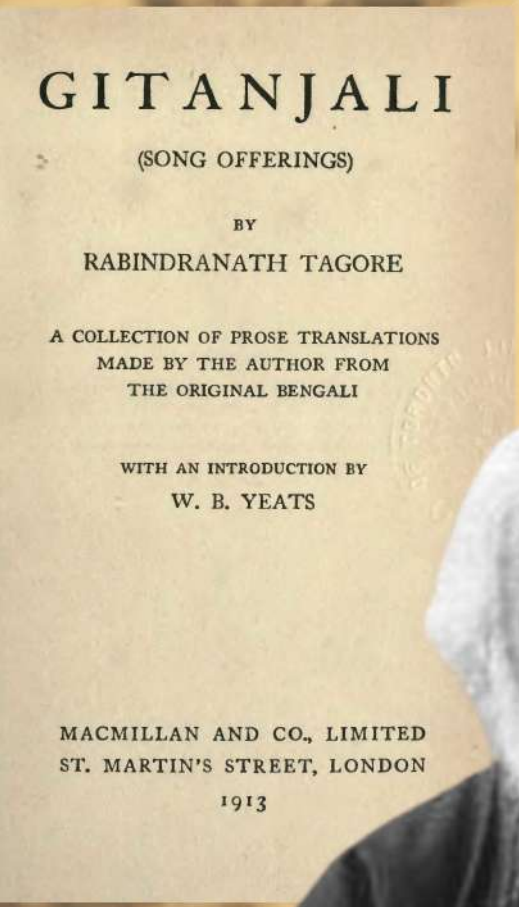
GITANJALI

(SONG OFFERINGS)

BY

RABINDRANATH TAGORE

A COLLECTION OF PROSE TRANSLATIONS
MADE BY THE AUTHOR FROM
THE ORIGINAL BENGALI

WITH AN INTRODUCTION BY
W. B. YEATS

MACMILLAN AND CO., LIMITED
ST. MARTIN'S STREET, LONDON
1913

एक प्रख्यात साहित्यिक और सांस्कृतिक हस्ती

टैगोर साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय थे। यह पुरस्कार उन्हें 1913 में गीतांजलि के लिए दिया गया था। उनकी कलम ने भारत को उसका राष्ट्रगान जन गण मन दिया। जैसा कि लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने 2025 में रवींद्र जयंती के अवसर पर कहा, "उनके कार्यों ने भारतीय जनता में देशभक्ति की भावना पैदा की।" रवींद्र संगीत का प्रभाव विश्व भर में कायम है। यह एक ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति का जीवंत प्रमाण है जिसने कविता, संगीत, चित्रकला और नाटक के क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी।

शांतिनिकेतनः मुक्ति के रूप में शिक्षा

1901 में, टैगोर ने **शांतिनिकेतन** में प्राचीन गुरुकुल परम्परा और मानव एकता की अपनी विचारधारा पर आधारित एक विद्यालय – विश्व भारती की स्थापना की। 2023 में, शांतिनिकेतन को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया, जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने "गुरुदेव की दृष्टि और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक" बताया।

एक संस्थागत विरासत

टैगोर ने अपने पैतृक गाँव के लिए एक सहकारी बैंक की स्थापना में नोबेल पुरस्कार की राशि का निवेश किया। यह ग्रामीण आत्मनिर्भरता के प्रति उनकी आजीवन प्रतिबद्धता का प्रतिबिम्ब था। भारत सरकार ने उनके द्वारा अपनाए गए मूल्यों में योगदान को मान्यता देने के लिए **टैगोर सांस्कृतिक सद्भावना पुरस्कार** के माध्यम से उनके आदर्शों को संस्थागत स्वरूप दिया।

TRIONDA

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

कार्रवाई के लिए आह्वान

133वाँ संस्करण

हमें बिजली बचानी है, हमें स्वच्छ ऊर्जा, **Clean Energy** अपनानी है।

आइए, हम सब मिलकर इस प्रक्रिया में भाग लें। जनगणना 2027 को सफल बनाएँ।

मैं आप सभी से आग्रह करूँगा कि **Northeast** का कोई-न-कोई बाँस का उत्पाद ज़रूर खरीदें। आप इसे **gift** के रूप में भी दे सकते हैं।

मेरा आग्रह है कि वे [स्कूली बच्चे] अपनी छुट्टियों का भरपूर आनंद लें और कुछ नया सीखने का प्रयास करें।

मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप **www.abhilekh-patal.in** को ज़रूर **visit** करें। यह आपको अपने इतिहास का अद्भुत अनुभव देगा।

गर्मियों के इस मौसम में आप सभी अपने स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखें।

Bhajanlal Sharma
@BhajanlalBjp

Show translation

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने आज #MannKiBaat कार्यक्रम में 'पवन ऊर्जा' के महत्व पर प्रकाश डाला। यह गर्व का विषय है कि राजस्थान आज इस क्षेत्र में देश का नेतृत्व कर रहा है।

हमारी सरकार प्रदेश में नवीकरणीय ऊर्जा के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा करने के लिए पूरी तरह संकल्पित है।

आइए, हम सब मिलकर स्वच्छ और हरित भविष्य की दिशा में अपना योगदान दें।

Kapil Mishra
@KapilMishra_IND

Subscribe

Show translation

हमें अपने उन वैज्ञानिकों पर गर्व है जो सिविल न्यूक्लियर प्रोग्राम के जरिए देश की प्रगति के पथ को आगे बढ़ा रहे हैं

: प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी
#MannkiBaat

Gajendra Singh Shekhawat
@gssjodhpur

Show translation

बीटिंग रिट्रीट में अब भारतीय संगीत भी शामिल है और इस पहल को देशभर में काफी पसंद किया गया है।

आज 'मन की बात' में मोदी जी ने बताया कि इस संगीत को अब ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म वेव्स में सुना जा सकता है और यह जल्द ही अन्य प्लेटफॉर्म्स पर भी उपलब्ध होगा।

#MannKiBaat

Shivraj Singh Chouhan
@ChouhanShivraj

Show translation

हमारे देश में इस समय एक बहुत अहम् जनगणना का अभियान चल रहा है। यह दुनिया की सबसे बड़ी जनगणना है।

जनगणना 2027 को digital बनाया गया है। सारी जानकारी सीधे digital माध्यम में दर्ज हो रही है।

– आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @NarendraModi जी

#MannKiBaat

Dr PARVEEN YOGRAJ
@dr_yograj

KALARI: THE TRUE "MOZZARELLA OF JAMMU" — A DOGRA DELICACY FINDS GLOBAL VOICE"

In the 133rd episode of Mann Ki Baat aired on 26 April 2026, Prime Minister #NarendraModi highlighted India's rich dairy heritage and praised Kalari cheese, referring to it as the "Mozzarella of Kashmir."
While the sentiment celebrates a proud regional product, it's important to set the geographical and cultural record straight.
Kalari is, in essence, the "Mozzarella of Jammu" — not Kashmir.
This traditional cheese originates from the Jammu region, particularly the areas of Ramnagar, Chenani, and Udhampur, where it has been prepared for generations.
Deeply rooted in the #DograCulture - Kalari a staple in the Dogri-speaking belt and is widely consumed by the Dogra community, forming an integral part of their culinary identity. While the Gujjar and Bakarwal communities have also preserved and contributed to its legacy, Kalari's everyday prominence in Dogra households makes it a defining food of Jammu's plains and foothills.
What makes Kalari special is its unique elastic texture and mild, milky flavor. When sautéed, it develops a crispy outer layer while remaining soft and stretchy inside—much like Mozzarella—hence the popular comparison. Served hot, often with bread or kulcha, it is both comfort food and cultural symbol.
As India's indigenous cheeses gain global recognition—especially at platforms like the Mundial do Queijo do Brasil—Kalari stands out as a shining example of how local traditions can travel far.
In the journey from "local to global," let's also ensure accuracy: Kalari belongs to Jammu, thrives in Dogra kitchens, and proudly represents the region's culinary soul.
#Kalari #MozzarellaOfJammu #DograCuisine #JammuPride #LocalToGlobal #IndianCheese #CulinaryHeritage #VocalForLocal @ajaykraina @DAkkhar @DrVikasPadha @dogra_ns @Shivani_Vaid @Thakurrajanwal2

Himanta Biswa Sarma
@himantabiswa

Show translation

पूर्वी भारत के जंगलों में जिसे कभी बोझ माना जाता था, वही Bamboo आज Innovation का प्रतीक है।

आदरणीय @narendramodi जी का यह observation 100% सही है, जिसका उदाहरण गुवाहाटी का नया एयरपोर्ट है।

#MannKiBaat

Sambit Patra
@sambitswaraj

Show translation

साल 2017 में कानून में बदलाव करके हमने Bamboo को पेड़ की Category से बाहर किया। जिसके नतीजे सबके सामने हैं।

आज पूरे Northeast में Bamboo Sector फल-फूल रहा है। लोग लगातार Innovation करके इसमें Value Addition कर रहे हैं।

- प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Dr Jitendra Singh
@DrJitendraSingh

It is very encouraging that in today's #MannKiBaat, while highlighting the transformation in India's dairy sector, PM Sh @narendramodi Ji mentioned #JammuAndKashmir's GI-tagged "Kalari Cheese", which has been designated under "One District One Product" as district #Udhampur product.
Glad to share that "Central Food Technological Research Institute" (CFTRI) Mysuru is working on a "Kalari" project to develop its different recipes for food outlets. Earlier the same institute had worked on Millet recipes which are now being served at McDonald's outlets as well.

K.Annamalai
@annamalai_k

In the 133rd episode of #MannKiBaat, our Hon PM Thiru @narendramodi avl shared some incredible milestones that define the 'New India' we are building together.

Proud moment for TN as our Hon PM lauded the Kalpakkam Fast Breeder Reactor, a major milestone in India's civil nuclear program.

Our PM also shared his happiness about India's unprecedented growth in Wind Energy. 56 GW of Wind Energy (4th globally) with 8GW added in one year alone. (1/4)

Bhupender Yadav
@byadavbjp

Show translation
Blackbuck और Great Indian Bustard के संरक्षण प्रयासों ने उत्साहजनक परिणाम दिए हैं।

#MannKiBaat

Tejasvi Surya
@Tejasvi_Surya

In today's #MannKiBaat, PM Shri @narendramodi Ji highlighted the importance of Bhagwan Gautama Buddha's principles in the current global conflicts.

PM Modi Ji also spoke about the Karma Monastery in Karnataka, a 'Living Forest' spread over 100 acres where more than 700 native trees are being preserved, a great example of how nature is an important part of our lives.

Watch.

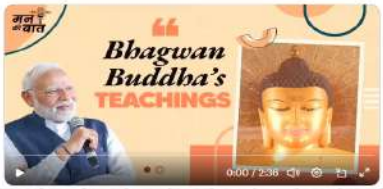

Piyush Goyal
@PiyushGoyal

Show translation
कुछ ही दिन बाद 9 मई को 'पोच्चीशे बोइशाख' के अवसर पर हम गुरुदेव टैगोर की जन्म-जयंती मनाएंगे।

गुरुदेव टैगोर लोगों के लिए ऐसे उद्योग के पक्षधर थे जिनमें स्थायी रोजगार मिलने के साथ ही गांवों का भी कल्याण हो।

#MannKiBaat

Pradip Kumar Varma
@PKVarmaRanchi

Show translation
आज Mann Ki Baat में देशभर से सामने आ रही प्रकृति संरक्षण की ये कहानियाँ न सिर्फ जागरूकता बढ़ा रही हैं, बल्कि लोगों को जुड़कर बदलाव लाने के लिए भी प्रेरित कर रही हैं।

ऐसे प्रयास दिखाते हैं कि जब जनभागीदारी बढ़ती है, तब पर्यावरण संरक्षण एक जन आंदोलन बन जाता है। 🇮🇳

#MannKiBaat

Dr. S. Jaishankar
@DrSJaishankar

In the 133rd edition of #MannKiBaat aired today, PM @narendramodi shared 🇮🇳's success stories across diverse domains:

✅ Commended the efforts of our scientists in advancing the Civil Nuclear Program, which has immensely benefited India's industrial growth, energy, agriculture, healthcare sectors, & modern innovators.

✅ Highlighted an organization in Chile, South America which is promoting the teachings of Bhagwan Buddha, bringing a sense of peace to people's lives through meditation and compassion.

✅ Praised the best ever performance of Indian daughters at the European Girls Mathematical Olympiad held in Bordeaux, France this month.

✅ Shared that two Indian cheese brands have received prestigious awards at an international cheese competition held in Brazil, creating a lot of interest globally.

मन की बात' में पीएम मोदी ने गिनाए सिविल न्यूक्लियर प्रोग्राम के फायदे

भारत ने विज्ञान को हमेशा राष्ट्र निर्माण और प्रगति से जोड़ा

ମନ୍ କି ବାତ୍‌ରେ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀ

ଭାରତର ବିକାଶ ପାଇଁ ସୌର ଶକ୍ତି ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ

वैश्विक मंच पर लहराया भारतीय चीज का परचम, मोदी ने 'मन की बात' में की तारीफ

मन की बातः पीएम ने कहा, कम से कम एक बांस उत्पाद जरूर खरीदें

भास्कर न्यूज़ | नई दिल्ली. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात के 133वें एपिसोड में देश में चल रही जनगणना प्रक्रिया को दुनिया का सबसे बड़ा अभियान बताया। उन्होंने कहा कि यह केवल सरकारी काम नहीं, बल्कि हर नागरिक की जिम्मेदारी है और इसमें सभी

की भागीदारी जरूरी है। अपने संबोधन में मोदी ने पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छ ऊर्जा पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत की पवन ऊर्जा क्षमता 56 गीगावाट से अधिक हो चुकी है, जो देश के सतत विकास की दिशा में बड़ा कदम है। इसके अलावा, उन्होंने पूर्वोत्तर के बांस उद्योग को बढ़ावा देने की अपील करते हुए लोगों से कम से कम एक बांस उत्पाद खरीदने का आग्रह किया। पीएम ने जैसलमेर में ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (गोडावण) को बचाने के प्रयासों की तारीफ की। प्रधानमंत्री ने कहा कि ब्राजील में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय पनीर प्रतियोगिता में दो भारतीय पनीर ब्रांडों को प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले हैं। भारतीय पनीर अब देश की सीमाओं को पार कर वैश्विक बाजारों और रेस्त्रां तक पहुंच रहा है।

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदीले 'मन की बात' मा सिक्किमको लगास्टल बाँस उद्यम र छुर्पीको गरे प्रशंसा

लगास्टल डिजाइन स्टुडियोका संस्थापक डिमी ओङ्दु मोटिवाले महिला उद्यमीहरूलाई समेत बनाइएकोमा प्रधानमन्त्रीलाई धन्यवाद दिइन्।

अणू ऊर्जेचा वापर आता शेती, आरोग्यासाठी

› पंतप्रधानांचे 'मन की बात'मध्ये प्रतिपादन

देशवासीयांना आवाहन

PMએ મન કી બાતમાં 'ફ્લેમિંગો સિટી' અને 'ઘોરાડ' ના સંરક્ષણની કરી સરાહના

ભારતીય સંસ્કૃતિના અભિન્ન હિસ્સાનું ઉત્તમ ઉદાહરણ કચ્છમાં છે

ભાસ્કર ન્યૂઝ | કાંઠે

પ્રધાનમંત્રી નરેન્દ્ર મોદીએ રવિવારે પ્રસારિત થયેલા 'મન કી બાત' કાર્યક્રમમાં કચ્છના રણ અને તેના વિશિષ્ટ પક્ષી જગતનો ઉલ્લેખ કર્યો હતો. તેમણે કચ્છમાં સ્થિત 'ફ્લેમિંગો સિટી' અને લુપ્ત થતા 'ઘોરાડ' પક્ષીના સંરક્ષણ માટે થઈ રહેલા પ્રયાસો પર ભાર મૂક્યો હતો.

પીએમ મોદીએ જણાવ્યું કે પ્રકૃતિ અને પર્યાવરણનું જતન એ ભારતીય સંસ્કૃતિનો અભિન્ન હિસ્સો રહ્યો છે, જેનું ઉત્તમ ઉદાહરણ કચ્છમાં જોવા મળે છે. કચ્છના મોટા રણમાં દર વર્ષે લાખોની સંખ્યામાં સુરખાબ પક્ષીઓ એટલે કે ફ્લેમિંગો મહેમાન બને છે. આ વિસ્તારને પીએમ મોદીએ 'ફ્લેમિંગો સિટી' તરીકે ઓળખાવતા કહ્યું કે, જ્યારે આ પક્ષીઓ અહીં માળાઓ બનાવે છે ત્યારે આખું રણ જાણે ગુલાબી ચાદર ઓઢી લેતું હોય તેવું ભાસે છે. તેમણે સ્થાનિક લોકજીવન સાથે પક્ષીઓના જોડાણનો ઉલ્લેખ

કરતા જણાવ્યું કે કચ્છના લોકો આ ફ્લેમિંગોને અત્યંત આદરસાથે 'રા લાખેજા જાની' કહે છે. પ્રધાનમંત્રીએ લુપ્ત થવાના આરે ઊભેલા અને રાજસ્થાન તથા ગુજરાતના રણ પ્રદેશમાં જોવા મળતા 'ઘોરાડ' પક્ષી વિશે વાત કરી હતી. તેમણે કહ્યું કે, એક સમય એવો હતો જ્યારે ઘોરાડની સંખ્યા ચિંતાજનક રીતે ઘટી ગઈ હતી, પરંતુ હવે કૃત્રિમ સંવર્ધન અને સરકારના સંનિષ્ઠ પ્રયાસોને કારણે આ પક્ષીઓના અસ્તિત્વ પરનું સંકટ ઓછું થઈ રહ્યું છે.

मन की बात से मैन्यू तक ऊधमपुर की कलाड़ी छाई

आपदा को अवसर में बदला

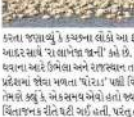

ऊधमपुर जिले में रोज 1500 किलो कलाड़ी तैयार होती

PM Modi Highlights 'Abhilekh Patal' Digital Archive

New Delhi: Prime Minister Narendra Modi on Sunday drew attention to a vast digital archive created by the National Archives of India, urging citizens to explore the 'Abhilekh Patal' portal for a deeper understanding of India's historical legacy.

Speaking during the latest episode of Mann Ki Baat, the Prime Minister said the portal hosts over 200 million digitised documents, including rare manuscripts, letters, and records related to key figures and events in Indian history.

Among the highlights, PM Modi mentioned the 7th-century Gilgit Manuscripts written on Bhoj Patra (birch bark), and the 8th-century text Siribhoovalay, known for its unique numerical grid format.

He also referred to historically valuable letters linked to Rani Lakshmibai, noting that these documents shed light on her decisions during the Indian Rebellion of 1857 and reflect her courage.

The Prime Minister added that the portal includes extensive material related to Subhas Chandra Bose, including documents on the Azad Hind Fauj and his speeches. Records associated with Madan Mohan Malaviya are also available, covering the founding of Banaras Hindu University and the Hindi Sahitya Sammelan.

In addition, users can access archival material related to the Constituent Assembly of India, offering insights into the framing of the Constitution.

Explaining the name, PM Modi said "Abhilekh" refers to records in Sanskrit, while "Patal" denotes a platform, together forming the acronym for Portal for Access to Archives and Learning.

During the broadcast, the Prime Minister also paid tribute to Rabindranath Tagore ahead of his birth anniversary, celebrated as Pochishe Boishakh on May 9.

Recalling his visits to Shantiniketan, PM Modi described Tagore as a multifaceted personality who contributed to literature, education, and rural development. He also noted the enduring global influence of Rabindra Sangeet.

The Prime Minister further remembered the upcoming anniversary of the Indian Rebellion of 1857, paying homage to those who ignited the spirit of patriotism during the uprising.

জনগণনার তথ্য সুরক্ষিত থাকবে, 'মন কি বাত'-এ আশ্বাস মোদীর

'मन की बात' के 133वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने देशवासियों को किया संबोधित

कच्छ की 'फ्लेमिंगो सिटी' के मुरीद हुए पीएम मोदी, पक्षियों को बताया 'लाखा जी के बाराती'

पवन ऊर्जा के मामले में भारत अब विश्व में चौथे स्थान पर आ पहुंचा

मन की बात का 133वां एपिसोड: जनगणना दुनिया का सबसे बड़ा अभियान

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने रविवार को प्रसारित मन की बात के 133वें एपिसोड में जनगणना का जिक्र किया। पीएम ने कहा- हमारे देश में इस समय एक बहुत अहम अभियान चल रहा है, जिसके बारे में हर भारतीय को जानकारी होनी जरूरी है। ये है जनगणना का अभियान, यह दुनिया की सबसे बड़ी जनगणना है। जो पहली बार इस तरह की प्रक्रिया में जुड़े हैं, इस बार जनगणना का उनका अनुभव, अलग होने वाला है। पीएम ने कहा- जिन राज्यों में एच-मापन का काम पूरा हो गया है, वहां घरों की लिस्टिंग का काम जारी है। अब तक लगभग 1 करोड़ 20 लाख परिवारों के मकान की लिस्टिंग का काम पूरा भी हो चुका है।

जनगणना में आपकी भागीदारी आसान बनाई गई है

आप खुद भी अपनी जानकारी दर्ज कर सकते हैं। कर्मचारी के आने से 15 दिन पहले आपके लिए सुविधा शुरू होगी। आप अपने समय के अनुसार जानकारी भर सकते हैं। जब आप प्रक्रिया पूरी करते हैं, तो आपको एक विशेष आईडी मिलती है। ये आईडी आपके मोबाइल या ईमेल पर आती है। बाद में जब कर्मचारी आपके घर आता है, तो आप यही आईडी दिखाकर जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं। इससे दोबारा जानकारी देने की जरूरत नहीं पड़ती।

बुद्ध का संदेश आज भी अहम

आज भी बात करने की शुरुआत एक पावन अवसर के साथ होने जा रही है। कुछ ही दिनों में हम बुद्ध पूर्णिमा मनाएंगे। मैं आप सभी देशवासियों को अपनी अग्रिम शुभकामनाएं देता हूं। भगवान गौतम बुद्ध का जीवन संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है। उन्होंने हमें सिखाया है कि शांति हमारे भीतर से शुरू होती है, उन्होंने बताया है कि स्वयं पर विजय सबसे बड़ी विजय होती है।

पर्यावरण संरक्षण के बड़े सुंदर प्रतीक

कच्छ के रण में बरसात खत्म होते ही वहां की धरती जीवंत हो जाती है। हर साल लाखों फ्लेमिंगो यहां आते हैं। पूरा इलाका गुलाबी रंग से रंग जाता है, इसलिए इसे Flamingo City कहा जाता है।
ये पक्षी यहीं घोंसले बनाते हैं और अपने बच्चों को बड़ा करते हैं। कच्छ के लोग इन्हें लाखा जी के बाराती कहते हैं। अब लाखा जी के ये बाराती कच्छ में पर्यावरण संरक्षण के बड़े सुंदर प्रतीक बन गए हैं।

विंड एनर्जी में भारत तेजी से आगे बढ़ रहा

आज पवन शक्ति भारत के विकास की नई कहानी लिख रही है। भारत ने हाल ही में पवन-ऊर्जा यानि विंड एनर्जी में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। अब भारत का विंड एनर्जी जनरेशन कैपेसिटी 56 गीगावॉट से अधिक हो चुकी है। पिछले एक साल में ही करीब 6 गीगावॉट नई क्षमता जुड़ी है। विंड एनर्जी में भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है और दुनिया भी हमारी तरफ देख रही है।

भारत के विकास के लिए पवन ऊर्जा जरूरी

गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, राजस्थान देश के अनेक राज्य इस सेक्टर में अपना परचम लहरा रहे हैं। गुजरात के कच्छ, पाटन, बनासकांठा जैसे क्षेत्र जहां पहले सिर्फ रेगिस्तान नजर आता था। आज वहां बड़े रिन्यूएबल एनर्जी पार्क बन रहे हैं। इसका लाभ युवाओं को मिल रहा है, नए अवसर बन रहे हैं, नई स्किल्स विकसित हो रही हैं, रोजगार के नए रास्ते खुल रहे हैं। साथियो, भारत के विकास के लिए सौर और पवन ऊर्जा जरूरी है।

पूरे नॉर्थईस्ट में बंबू सेक्टर फल-फूल रहा है

पेड़ों के बजाय कानून के हिसाब से बांस को पेड़ के रूप में परिभाषित किया गया था और इससे जुड़े नियम बहुत कड़े थे। कहीं पर भी बांस को ले जाना बहुत मुश्किल था। ऐसे में वहां के लोग बांस से जुड़े काम धंधे से दूर होते गए। साथियो, साल 2017 में कानून में बदलाव करके हमने बांस को पेड़ की कैटेगरी से बाहर किया। जिसके नतीजे सबके सामने हैं। आज पूरे नॉर्थईस्ट में बंबू सेक्टर फल-फूल रहा है।

मन की बात में बोले पीएम मोदी

'विंड एनर्जी में आगे बढ़ रहा भारत, दुनिया की चौथी बड़ी ताकत'

प्रधानमंत्री का तिलतमेंट मॉडल को सलाम

मन की बात : गणित ओलंपियाड में हमारी बेटियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया: मोदी

'मन की बात' रेडियो कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा

जनगणना में नागरिकों की जानकारी गोपनीय रहेगी

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 26 अप्रैल।

भारतीय चीज की वैश्विक लोकप्रियता बढ़ी, डेयरी क्षेत्र में हो रहा बड़ा बदलाव

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 26 अप्रैल।

'मन की बात' : प्रधानमंत्री मोदी ने गिनाए सिविल न्यूक्लियर प्रोग्राम के फायदे

सिविल न्यूक्लियर प्रोग्राम जनहित में अहम

जनगणना में डिजिटल नागरिकों का बढ़ाया उत्साह

PM Modi lauds Sikkim's Lagastal Bamboo Enterprise and Chhurpi in Mann Ki Baat

PRAKASH ADHIKARI

GANGTOK, APRIL 27: In the 122nd episode of his monthly radio programme Mann Ki Baat on Sunday, Prime Minister Shri Narendra Modi, describing the Northeast as the Ashtalakshmi of the nation, lauded its immense talent and natural beauty.

He said the region's achievements are often highlighted in Mann Ki Baat, and on Sunday he focused on one such success - the transformation of the bamboo sector. "Friends, what was once seen as a burden is today giving new momentum to employment, business, and innovation. Our mothers and sisters are its biggest beneficiaries," the Prime Minister said.

The Prime Minister recalled that under a British-era law, bamboo was defined as a tree with very strict rules, making its transport extremely difficult and pushing people away from bamboo-related livelihoods. "In 2017, by amending the law, we removed bamboo from the category of trees. The results are there for everyone to see. Today, the bamboo sector is flourishing across the entire Northeast. People are continuously innovating and adding value to it," he added.

Highlighting an example of this transformation, PM Modi spoke about the Lagastal Bamboo Enterprise Team near Gangtok in Sikkim. "I also learned about the Lagastal Bamboo Enterprise Team near Gangtok in Sikkim. It manufactures handicrafts, incense sticks, furniture and interior decor items from bamboo," he said.

Lagastal Design Studio, often referred to as Lagastal or Lagastal Enterprises, is a renowned, women-led bamboo manufacturing enterprise based in Gangtok, Sikkim. Founded by entrepreneur, sustainable innovator and fashion designer Smt Chumi Ongmu Bhutia, the studio specialises in sustainable, eco-friendly bamboo handicrafts, interior decor, light fixtures, and modern home accessories. Expressing her gratitude after the mention, Smt Bhutia said, "I would like to express my heartfelt gratitude to our Prime Minister and Chief Minister of Sikkim for their continued support towards entrepreneurship, women empowerment and sustainable development." Crediting the Prime Minister's vision for enabling grassroots change, she said, "Special thanks to our Prime Minister Modi for creating an India where ordinary people like us can dream big, believe in ourselves and work towards success. Your vision has inspired many individuals from small states like Sikkim to think beyond their limits and create opportunities for others."

The Prime Minister also noted the major transformation underway in India's dairy sector, where value addition has given traditional flavors a new global identity. Referring to Sikkim, he said, "'Chhurpi' is very popular in Sikkim. The simplicity and gentleness of the mountains can also be felt in its taste. The special feature of this cheese is that it is made from yak milk." The twin recognition of Sikkim's bamboo innovation and its traditional Chhurpi cheese in Mann Ki Baat underscores the State's growing role in India's journey of sustainable development and cultural pride.

ಪ್ರಕೃತಿ ಸಂರಕ್ಷಣೆ ಪ್ರಯತ್ನ ಶ್ಲಾಘಿಸಿದ ಪ್ರಧಾನಿ ನರೇಂದ್ರ ಮೋದಿ। ಬೈಲುಕುಪ್ಪೆಯ ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಬೌದ್ಧವಿಹಾರ

ಮನ್ ಕಿ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಟಿಬೆಟಿಯನ್ ಕ್ಯಾಂಪ್ ಉಲ್ಲೇಖ

■ ವಿಜಯವಾಣಿ ಸುದ್ದಿಜಾಲ ಮೈಸೂರು

ಅತಿದೊಡ್ಡ ನಿರಾಶ್ರಿತರ ನೆಲೆ

ಬೈಲುಕುಪ್ಪೆ ವಿಶ್ವದ ಅತಿದೊಡ್ಡ ನಿರಾಶ್ರಿತರ ನೆಲೆಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಇಲ್ಲಿ ಸುಮಾರು 20,000 ಟಿಬೆಟಿಯನ್ನರು ಹಾಗೂ 7,000 ಬೌದ್ಧ ಭಿಕ್ಷುಗಳಿದ್ದಾರೆ. ದೇಶದ ವಿವಿಧೆಡೆ ನೆಲೆಸಿರುವ ಟಿಬೆಟಿಯನ್ನರಿಗೆ ಬೈಲುಕುಪ್ಪೆ ಒಂದು ಪವಿತ್ರ ಯಾತ್ರಾ ಸ್ಥಳ. ನಿರಾಶ್ರಿತ ಟಿಬೆಟಿಯನ್ನರ ಕೇಂದ್ರ ಸ್ಥಾನ ಹಿಮಾಚಲ ಪ್ರದೇಶದ ಧರ್ಮಶಾಲಾ. ಜತೆಗೆ ಬೈಲುಕುಪ್ಪೆ ಪ್ರವಾಸಿ ತಾಣವಾಗಿ ಪ್ರಖ್ಯಾತಿ ಪಡೆಯಲು ಇಲ್ಲಿ ನಿರ್ಮಿಸಲ್ಪಟ್ಟಿರುವ ಸ್ವರ್ಣ ದೇಗುಲವೇ (ಗೋಲ್ಡನ್ ಟೆಂಪಲ್) ಪ್ರಮುಖ ಕಾರಣ. ಸ್ವರ್ಣ ಮಂದಿರ ಸೇರಿದಂತೆ ಸುಮಾರು 15ಕ್ಕೂ ಹೆಚ್ಚು ವಿವಿಧ ದೇಗುಲಗಳು, ಧ್ಯಾನಕೇಂದ್ರ, ... ಬೌದ್ಧವಿಹಾರ, ಬೌದ್ಧ ಭಿಕ್ಷುಗಳ ಮಹಾವಿದ್ಯಾಲಯ, ಆಸ್ಪತ್ರೆ, ಬೌದ್ಧ ವಿಹಾರದ ಸುತ್ತ 1300 ಪ್ರಾರ್ಥನಾ ಚಕ್ರಗಳು, 8 ಸ್ತೂಪಗಳು ಸೇರಿದಂತೆ ಹಲವಾರು ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯಗಳಿಂದ ಪ್ರವಾಸಿಗರನ್ನು ಸೆಳೆಯುತ್ತಿದೆ.

ଗୌତମ ବୁଦ୍ଧଙ୍କ ଆଦର୍ଶକୁ ପାଳନ କରିବା: ମୋଦୀ

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ମନ୍ କୀ ବାତ୍

ମହାକାଶ ବିଜ୍ଞାନରେ ଭାରତର ଅବଦାନ ସମ୍ପର୍କରେ ବର୍ଣ୍ଣନା

مردم شماری صرف حکومت کا کام نہیں، ہم سب کی ذمہ داری ہے

ملک کی ترقی کیلئے شمسی اور ہوائی توانائی ناگزیر۔ من کی بات پروگرام سے وزیراعظم کا خطاب

मन की बात न्यूक्लियर, ग्रीन एनर्जी और पर्यावरण संरक्षण पर PM का रहा ज़ोर

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात के 133वें एपिसोड में विज्ञान, स्वच्छ ऊर्जा, सांस्कृतिक विरासत, पर्यावरण संरक्षण को केंद्र में रखते हुए आत्मनिर्भर और विकसित भारत का व्यापक विज़न सामने रखा। अपने संबोधन में उन्होंने तमिलनाडु के कलपक्कम में स्वदेशी फास्ट ब्रीडर रिएक्टर के क्रिटिकलिटी हासिल करने को भारत की परमाणु ऊर्जा यात्रा का ऐतिहासिक मील का पत्थर बताया। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह रिएक्टर पूरी तरह स्वदेशी तकनीक से निर्मित है और भारत के सिविल न्यूक्लियर प्रोग्राम को नई दिशा देगा। उन्होंने इसे देश के ऊर्जा, स्वास्थ्य, कृषि और औद्योगिक विकास के लिए अहम बताया।

'आध्यात्मिक धारा दुनिया तक पहुंच रही'

बुद्ध पूर्णिमा के संदर्भ में प्रधानमंत्री ने भगवान बुद्ध के शांति, करुणा और संतुलन के संदेश को आज के वैश्विक तनावों के दौर में अत्यंत प्रासंगिक बताया। उन्होंने कहा कि बुद्ध के विचार विश्व शांति के लिए अनिवार्य हैं और भारत की आध्यात्मिक धारा दुनिया तक पहुंच रही है। अपने संबोधन में मोदी ने पर्यावरण संरक्षण की प्रेरक कहानियों का भी जिक्र किया। कच्छ के फ्लेमिंगो संरक्षण, उत्तर प्रदेश में गज मित्र अभियान, छत्तीसगढ़ में ब्लैकबक की वापसी और गोडावण संरक्षण जैसे प्रयासों को उन्होंने जनसहभागिता का उदाहरण बताया।

कहा- डिजिटल जनगणना ऐतिहासिक

पूर्वोत्तर भारत के बांस उद्योग की सफलता को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि 2017 में कानून में बदलाव के बाद यह क्षेत्र रोजगार, नवाचार और महिला सशक्तिकरण का माध्यम बना है। उन्होंने देशवासियों से पूर्वोत्तर के बांस उत्पाद खरीदने की अपील की। प्रधानमंत्री ने डिजिटल जनगणना 2027 को भी ऐतिहासिक पहल बताया। उन्होंने कहा कि यह दुनिया की सबसे बड़ी डिजिटल जनगणना होगी, जिसमें नागरिक स्वयं भी अपनी जानकारी दर्ज कर सकेंगे।

PM Modi Highlights India's Progress, Urges Participation in Census 2027 in Mann Ki Baat

New Delhi: Prime Minister Narendra Modi on Sunday highlighted India's expanding achievements across sectors—from renewable energy and nuclear science to culture, technology and citizen participation—in his monthly radio programme Mann Ki Baat. He called on citizens to actively participate in the upcoming Census 2027, describing it as a crucial national exercise and assuring that personal data would remain secure. Emphasising collective responsibility, the Prime Minister said the Census was not merely a government task but one that required the involvement of every citizen. He underlined that the information shared would remain confidential and protected by robust digital safeguards.

Highlighting recent scientific progress, Modi pointed to a milestone in India's nuclear energy programme. He said the Fast Breeder Reactor at Kalpakkam in Tamil Nadu has achieved criticality, marking the beginning of its operational phase. Calling it a historic step, he noted that the reactor has been built entirely using indigenous technology. Renewable energy featured prominently in his address, with a focus on wind power as a key driver of growth. The Prime Minister said India's wind energy capacity has now crossed 56 gigawatts, describing it as a significant milestone in the country's development journey. Turning to cultural heritage, Modi highlighted a major digitisation effort by the National Archives of India. A newly launched portal hosts more than 200 million digitised documents, including rare manuscripts and historical records. Among them are 7th-century Gilgit manuscripts written on birch bark, the 8th-century numerical text Shri Bhuvaleya, and letters linked to Rani Lakshmibai that shed light on her role during the 1857 uprising. The collection also includes documents related to Subhas Chandra Bose, the Azad Hind Fauj, and Madan Mohan Malaviya, covering aspects such as the founding of Banaras Hindu University and the Hindi Sahitya Sammelan. Records from India's Constituent Assembly are also part of the archive, offering insights into the country's formative years. The Prime Minister encouraged citizens to explore the portal, saying it offers a unique window into India's history. He also paid tribute to Rabindranath Tagore ahead of his birth anniversary and Pochishe Boishakh on May 9. Recalling his visits to Shantiniketan, Modi honoured Tagore's enduring legacy.

ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਮੋਦੀ ਵੱਲੋਂ 'ਮਰਦਮਸ਼ੁਮਾਰੀ 2027' ਨੂੰ ਸਫਲ ਬਣਾਉਣ ਦਾ ਸੱਦਾ

'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' ਰਾਹੀਂ ਦੇਸ਼ਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਕੀਤੀ ਅਪੀਲ

ਸਾਡੀਆਂ ਧੀਆਂ ਨੇ ਗਣਿਤ ਓਲੰਪੀਆਡ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਵਧੀਆ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਕੀਤਾ,

PM lauds energy, nuclear milestones, urges people to endorse Census 2027

EXPRESS NEWS SERVICE @ New Delhi

PRIME Minister Narendra Modi on Sunday lauded the nation for hitting milestones in the nuclear programme and the renewable energy sectors during his monthly radio address Mann ki Baat. He also urged citizens to actively participate in the ongoing Census 2027 exercise.

Describing a recent achievement in the nuclear programme as a "historic milestone", he said that the fast breeder reactor at Kalpakkam in Tamil Nadu has successfully achieved criticality. He noted that this marks a significant step forward in India's journey towards obtaining self-reliance in the energy sector and advanced nuclear capability.

Explaining the technical milestone, Modi said that criticality refers to the stage at which a nuclear reactor initiates a self-sustaining chain reaction for the first time, effectively signalling the beginning of its operational phase. He emphasised that the reactor has been developed entirely using indigenous technology.

He also pointed out that India recently crossed a major milestone in wind energy generation, with total installed capacity exceeding 56 GW. He added that approximately 6 GW of new capacity has been added over the past year alone, reflecting steady growth in the sector.

He called Census 2027 exercise as the largest such operation in the world. He urged citizens to view participation as a collective national duty. He said that all information collected during the census would remain secure and confidential.

This marks a significant step forward in India's journey towards obtaining self-reliance in the energy sector and advanced nuclear capability

Narendra Modi, PM

Wind energy

Modi pointed out that India recently crossed a milestone in wind energy with installed capacity exceeding 56 GW.

Beating Retreat music now available on WAVES OTT: PM

PIONEER NEWS SERVICE
New Delhi

For the first time, the music of Beating Retreat has been made available on WAVES OTT, and in the future, it will be made available on other platforms too, Prime Minister Narendra Modi said on Sunday.

In his monthly radio address 'Mann Ki Baat', Modi said that over the past few years, the inclusion of Indian music in the ceremony has increased, which is being liked by people across the country.

This year's Beating Retreat ceremony was very memorable as the Air Force, Army, Navy, and CAPF bands gave excellent performances, he said.

The prime minister said the Air Force band composed the Sindoor formation while the Naval band composed the 'Matsya Yantra' formation.

The Army band's performance showcased 150 years of Vande Mataram as well as India's success in cricket, he said.

"You may have noticed that this ceremony showcases the diverse musical traditions of different bands. This programme of splendid formations, along with vibrant music, is sure to draw everyone's attention," Modi said.

After the Beating Retreat, all this hard work and achievements used to fade away, but now a highly commendable initiative has been undertaken pertaining to it, he said.

Modi urges people to purchase bamboo products from NE

PM hails entrepreneurs from Tripura, Nagaland, Mizoram, Sikkim in *Mann Ki Baat*

A CORRESPONDENT

NEW DELHI, April 26: Highlighting the transformative growth of the bamboo sector in the Northeast over the years, Prime Minister Narendra Modi on Sunday urges the people across the country to purchase bamboo products from the region.

"You can even present them as gifts," Modi said while addressing the 133rd episode of the *Mann Ki Baat*.

Terming the region as "Ashtalakshmi" and a symbol of prosperity, talent and natural beauty, Modi said that the Northeast has consistently demonstrated remarkable achievements, and the recent success in the bamboo sector stands out as a powerful example of how policy reforms can unlock economic potential.

"What was once viewed as a burden is now giving new impetus to employment, business and innovation. Women, particularly in rural areas, have emerged as the biggest beneficiaries of this transformation," Modi said.

The Prime Minister noted that under British-era laws, bamboo was classified as a tree, which imposed strict regulations on its harvesting and transportation. These restrictions, he said, discouraged people from engaging in bamboo-related economic activities, despite the region's abundance of the resource.

However, a major policy shift in 2017 changed this landscape. The government removed bamboo from the category of trees under the law, thereby easing transit restrictions and enabling farmers, artisans and entrepreneurs to freely cultivate and market bamboo products.

"The results are visible to everyone," Modi said, highlighting that the bamboo sector is now flourishing across the Northeast with people embracing innovation and value addition.

Citing examples, Modi referred to entrepreneurs Bijoy Sutradhar from Gomati district and Pradeep Chakraborty from South Tripura.

» SEE PAGE 2

आज तक

Mann Ki Baat: 'जनगणना में भाग लेना हर नागरिक की जिम्मेदारी...', PM मोदी की जनता से अपील

अमर उजाला

'मन की बात': पीएम मोदी ने गोडावण संरक्षण और पवन ऊर्जा मॉडल की सराहना, कहा- राजस्थान दिखा रहा भविष्य की दिशा

भारत EXPRESS
सत्य • साहस • समर्पण

When PM Modi Mentioned 'Kalari': پی ایم مودی نے 'کلاری' کا ذکر کیا تو اُدھم پور کے لوگوں نے کہا—یہ ہمارے لیے فخر کی بات ہے

தினகரன்

அணுப்பிளவு நிலையை அடைந்து கல்பாக்கம் ஈனுலை வரலாற்று சாதனை: பிரதமர் மோடி பாராட்டு

ETV بھارت

'من کی بات' بھارت نے ہوا کی توانائی میں ایک اہم سنگ میل حاصل کیا، دنیا میں چوتھے نمبر پر ہے اپنا ہندوستان: پی ایم مودی

ಪ್ರಜಾವಾಣಿ

ಮನದ ಮಾತು | ದೇಶದ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಗೆ ಪವನ, ಸೌರಶಕ್ತಿ ಅಗತ್ಯ: ಪ್ರಧಾನಿ ನರೇಂದ್ರ ಮೋದಿ

REPUBLICWORLD.COM

PM Modi Urges Citizens to Participate in Census 2027, Calls It 'Shared Responsibility' in Mann Ki Baat Episode

THE ECONOMIC TIMES

Blackbucks reappeared in Chhattisgarh: PM Modi on wildlife revival, stress human nature harmony in Mann Ki Baat

businessline.

India achieves major milestone in wind energy; capacity now 56 GW: PM Modi

THE NEW INDIAN EXPRESS

PM Modi urges public participation in digital Census 2027, assures data security in 'Mann Ki Baat'

The Statesman

PM Modi highlights nuclear milestone, wind energy surge and cultural legacy in 'Mann Ki Baat' address

THE TIMES OF INDIA

Growth of bamboo sector in NE gets spotlight in PM's Mann Ki Baat

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव हमारे लिए महत्त्वपूर्ण हैं! हमें इस ईमेल एड्रेस पर लिखें : mkb-mib@gov.in

हमें बिजली संरक्षण करना चाहिए और स्वच्छ ऊर्जा को अपनाना चाहिए। देश में हर स्तर पर ऐसे प्रयास आवश्यक हैं, क्योंकि इन्हीं से व्यापक परिवर्तन सम्भव हो पाता है।

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार